१ ओं

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज

की

आत्म कथा

विचित्र-नाटक

प्रकाशक :

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी

अमृतसर ।

भेंट ३७ पैसे

पहली वार	२५००
दूसरी वार	५०००

प्रस्तावना

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा हिन्दी पाठकों के हितार्थ, श्री गुरु गोविन्द सिंह महाराज की पवित्र वाणी का यह हिन्दी ग्रंथ 'विचित्र-नाटक' प्रकाशित किया जा रहा है। दशमेश गुरु जी ने तत्कालीन जन-भाषा–हिन्दी–में जो विपुल साहित्य रचना की, उस का उद्देश्य बतलाते हुए आप ने लिखा था :–

और वासना नाहि कुछ धर्म जुद्ध को चाव ॥

अर्थात् इस वीर-रस-पूर्ण साहित्य रचना से पाठकों में धर्म युद्ध का उत्साह भरने के सिवाय मेरा अन्य कोई अभिप्राय नहीं है। प्रस्तुत ग्रंथ की रचना भी इसी अभिप्राय को ले कर ही की गई है।

विचित्र-नाटक नाम क्यों ?

वास्तव में यह 'नाटक' ग्रंथ नहीं, जैसा कि इस के नाम से प्रकट होता है, वरन् साहित्यिक दृष्टि-कोण से इसे 'महा काव्य' कहना चाहिये। इसे नाटक का नाम दिया गया है तो केवल इस लिए कि इस में अपनी आत्म कथा का वर्णन करते हुए गुरु जी ने कतिपय पारलौकिक घटनाओं का उल्लेख इस प्रकार से किया है, जिस से अगम्य एवं आध्यात्मिक प्रतिपादित विषय लौकिक-बुद्धि-गोचर हो गया है। मानव बुद्धि तो लौकिक उपकरणों को ले कर संगठित हुई है, यह पारलौकिक विषय उस के लिए सर्वथा अगम्य होता, किंतु गुरु जी ने इस ग्रंथ द्वारा हमें उस अगम्य के वह चित्र दिखाए हैं, जिन्हें यर्थाथ घटनाओं का केवल अभिनय ही कहा जा सकता है। यह अभिनय अद्भुत एवं विचित्र होने से ही इस ग्रंथ का नाम "विचित्र नाटक" है।

एक परम अध्यात्म सत्ता का दूसरी अध्यात्म सत्ता के साथ वार्त्तालाप करते हुए दिखाया जाना कैसा विचित्र अभिनय है। जैसा कि–"अकाल पुरुष वाच :—

मैं अपना सुत तोहि निवाजा।
पंथ प्रचुर करिबे को साजा।
जाह तहा तै धर्म चलाइ।
कुबुद्धि करन ते लोक हटाइ।"

परम अध्यात्म सत्ता श्री अकाल पुरुष ने मुझ-कीट से कहा:—मैं ने तुम्हें पुत्र रूप में ग्रहण किया है। केवल पंथ के प्रचार के लिए, वहां जाओ और धर्म का विकास करो, जगत् के लोगों को अज्ञान पूर्ण कार्यों से हटाओ।"

किन्तु उस परम आनंदमय अवस्था को छोड़ कर :—

चित न भयो हमरो आवन कहि।
चुभी रही श्रुति प्रभु चरनन महि।

अकाल पुरुष ने मुझे ससार की पतित दशा की याद दिलाते हुए बाध्य किया और मैं पिता के इस आग्रह को टाल न सका, आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए :–

ठाढ भयो मै जोरि कर, बचन कहा सिर निआइ।
पंथ चलै तब जगत मैं जब तुम करहु सहाय।

मेरें प्रभु ने मुझे सर्वत्र सहायता का वचन दिया तो मैंने कलियुग में जन्म ग्रहण किया। और अब मेरी प्रतिज्ञा है—

कहियो प्रभू सु भाखिहों।
किसू न कान राखिहों।
किसू न भेख भीजहों।
अलेख बीज बीज हों।
पाषाण पूजहों नहीं।
न भेख भीज हों कहीं।

अनन्त नामु गाय हों ।
परम पुरुष पाय हों ।
जटा न सीस धारिहों ।
न मुन्द्रिका सवारि हों ।
न कान काहू की धरों ।
कह्यो प्रभू सु मैं करों ।

काल सर्वोपरि है

काल अथवा महाकाल परमात्मा की संहार-शक्ति का नाम है, किन्तु श्री गुरु जी ने इस शक्ति के नाम से अकाल-पुरुष परमात्मा को सम्बोधित किया है ।

प्रथम अध्याय में ही काल जी की स्तुति का बखान करते हुए लिखा है कि 'श्री काल की महा सत्ता के सामने सब अवतार, पीर, पैग़म्बरं, औलिया, देवी-देवता आदि तुच्छ हैं क्योंकि 'सबै काल के अन्त दाढ़ा तले हैं।' वह सर्व व्यापक है :–

कहूं रूप धारे महाराज सोहं ।
कहूं देव कन्यान मान के मोहं ।
कहूं वीर ह्वै कै धरे बान पानं ।
कहूं भूप ह्वै कै वजाय नीसानं ।

लाख यत्न करने पर भी महाकाल की चोट से कोई रक्षा नहीं पा सकता :–

करे कोट कोऊ धरे कोट ओटं ।
बचैगो न क्यों हूं करै काल चोटं ।

जो 'काल' में उत्पन्न हुए हैं वे उसी के वश में हैं, केवल

'काल' ही 'अकाल' है :–

काल ही पाय भयो भगवाम सु,
जागत या जग जांकी कला है ।

काल ही पाय भयो ब्रह्मा, सिव,
काल ही पाय भयो जुगिया है।
काल ही पाय सुरासुर गधर्व,
जच्छ भुजंग दिसा-बिदिसा है ।
और सु काल सबै वस काल के,
एक ही काल अकाल सदा है।

उस महा काल के घाव से रक्षा पाने का अन्य कोई उपाय नहीं, केवल शरण प्राप्त कर लेने से ही रक्षा हो सकती है —

एसो न कै गयो कोई सु दाव रे,
जाहि उपाव सों घाव बचईऐ।
जाँते न छूटीऐ मूढ़ कहुं, हस
तांकी न क्यों सरणागति जईऐ।

इसी अध्याय में आप ने अवतारवाद, मूर्त्ति पूजा, मनूष्य-पूजा, रूढ़ि-वाद आदि पाखण्डों का भली प्रकार खण्डन किया है, चेतावनी दी है :–

पाय परो परमेसुर के जड़,
पाहन मैं परमेसुर नाही ॥

'सोढी' तथा 'बेदी'

दूसरे अध्याय में संक्षेप रूप से सूर्य वंश की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है, दक्ष प्रजापति की कन्याओं में से 'बनिता, कदरू, दिति, अदिति आदि के साथ कश्यप ऋषि ने विवाह किया, जिन के उदर से नाग, नागरिपु, दैत्य तथा देवों की सृष्टि हुई। उन देवों में ही 'सूर्य' भी थे : सूर्य के वंश से आगे जा कर 'रघु' और बाद में दशरथ के पुत्र राम चन्द्र हुए । परम प्रतापी राम चन्द्र के दो

पुत्र लव और कुशु। इन दोनो में से आगे जा कर कुशु की सन्तान से सोढी और लव की संतान से बेदी वंश चला। उसी श्रेष्ठ बेदी वंश में गुरु नानक देव प्रकट हुए और सोढी वंश में गुरु रामदास महाराज चतुर्थ सद्गुरु और उन के बाद दशम गुरु पर्यन्त शेष छः सद्गुरु।

दश गुरुओं में एक ही ज्योंति

पंचम अध्याय में गुरु जी ने विभिन्न गुरु व्यक्तियों में व्यापक एक गुरु जोति का उल्लेख इस प्रकार किया है :—

नानक अंगद को बपु धरा।
धर्म प्रचुर इह जग मो करा।
अमर दास पुन नाम कहायो।
जन दीपक ते दीप जलायो।

और फिर कहा है :—

श्री नानक अंगद करि जाना।
अमर दास अंगद पहिचाना।
अमर दास रामदास कहायो।
साधन लखा मूढ़ नहि पायो।

अपने पिता गुरु तेग बहादुर के बलिदान का वर्णन इन शब्दों में किया है :—

तिलक जंञू राखा प्रभु तांका।
कीनो बडो कलू महि साका।

अर्थात् मेरे पिता का बलिदान हिन्दू सभ्यता के प्रतीक 'तिलक' और 'यज्ञोपवीत' की रक्षा के निमित्त हुआ। पिता जी ने अपने देह-रूपी मिट्टी के बर्त्तन को सम्राट् औरंगज़ेब के सिर पर फोड़ कर प्रभु लोक को प्रस्थान किया—

ठीकरि फोरि दिल्लीस सिर, प्रभु पुरि किया पयान।
तेग बहादुर सी क्रिया, करी न किनहूं आन।

मेरा कार्य-क्रम क्या होगा ?

गुरु जो ने संसार में अपना कार्य-क्रम बतलाते हुए कहा :-

हम एह काज जगत मो आए।
धर्म हेतु गुरु देव पठाए।
जहां तहां तुम धर्म बिथारो।
दुष्ट दोखीअन पकर पछारो।
याही काज धरा हम जनमं।
सभझ लेहु साधू सब मनमं।

धर्म चलावन सन्त उबारन।
दुष्ट सभन को मूल उपारन।

श्री मद् भगवद्गीता में श्री कृष्ण द्वारा प्रतिपादित निम्न श्लोक के साथ उक्त गुरु-प्रवचन की कैसी अद्भुत साम्यता है —

परित्राणाय साधुना विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे

जहां कृष्ण गोविन्द ने कहा कि मैं साधुओं की रक्षा और दुष्टों का नाश करते हुए धर्म की संस्थापना करने के लिए प्रत्येक युग में आता रहता हूं, वहां गुरु गोविन्द सिह जी ने कहा कि मैं उक्त महा कार्यों की पूर्ति के निमित्त संसार में आया हूं।

इतिहास के विद्यार्थी भली प्रकार परिचित है कि गुरु महाराज को उक्त कार्य-क्रम निबाहने के हेतु कैसा महान त्याग करना पड़ा और अपने उद्देश्य में उन्हें कैसी प्रभूत सफलता प्राप्त हुई।

शिष्यों को एक कड़ी चेतावनी

तत्कालीन भारत में अवतारवाद एवं मानव-पूजा की बढ़ी हुई कुत्सित प्रवृत्ति को देखते हुए आप ने अपने शिष्यों को अत्यन्त स्पष्ट, किंतु कठोर शब्दों में आदेश किया कि मुझे केवल मनुष्य समझा जाय, मैं परमेश्वर नहीं, प्रत्युत परमेश्वर का सेवक हूं :–

जो हम को परमेसर उचरि हैं।
ते सब नरक कुण्ड महि परि हैं।
मो कौ दास तवन का जानो।
या मैं भेद न रंचक मानो।
मैं हों परम पुरुख को दासा।
देखन आयो जगत तमासा।

आदर्श-मनुष्य

वह 'परम पुरुष का दास' अथवा 'परम मनुष्य' था, अपनी परिभाषा में श्री गुरु जी ने जिसे 'खालसा' नाम दिया है, उसी का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण आप का यह आत्म चरित्र है। इसी खालसा का वाक्य चित्र आप ने अन्यत्र इस प्रकार खींचा है।

जागत जोति जपै निसि बासर
एक बिना मन नैक न आनै।

पूरण प्रेम प्रतीत सजै
ब्रत गोर मढ़ी मठ भूल न मानै।
तीर्थ दान दया तप संजम
एक बिना नहि एक पछानै।
पूरण जोति जगै घट में
तब खालस ताहि निखालस जानै।

इति ॥

अमर सिंह 'चाकर'

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

विचित्र-नाटक

अथ विचित्र-नाटक ग्रन्थ लिख्यते ॥

त्व प्रसादि ॥ श्री मुख-वाक्य पातशाही १० ॥

दोहरा ॥

नमस्कार श्री खड़ग को करो सु हित चितु लाइ ॥
पूरण करो ग्रन्थ इहु तुम मुहि करहु सहाइ ॥ १ ॥

त्रिभंगी छन्द ॥

(श्री काल जी की स्तुति)

खग खंड बिहंडं खल दल खंडं अति रण मंडं बरबंडं ॥
भुजदंड अखंडं तेज प्रचंडं जोति अमंडं भानु प्रभं ॥
सुख संता करणं दुरमति दरणं किलबिख हरणं असि सरणं ॥
जय जय जग कारण सृष्टि उबारण मम प्रतिपारण जय तेगं ॥२॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

सदा एक जोत्यं अजोनी सरूपं ॥
महादेव देवं महा भूप भूपं ॥
निरंकार नित्यं निरूपं निर्बाणं ॥
कलंकारणेयं नमो खड़ग-पाणं ॥ ३ ॥

निरंकार निर्बिकार नित्यं निरालं ॥
न बृद्धं बिसेखं न तरुणं न बालं ॥
न रंकं न रायं न रूपं न रेखं ॥
न रंगं न रागं अपारं अभेखं ॥ ४ ॥

न रूपं न रेखं न रंगं न रागं ॥
न नामं न ठामं महा जोति जागं ॥
न द्वैखं न भेखं निरंकार नित्यँ ॥
महा जोग जोगं सु परमं पवित्यँ ॥ ५ ॥

अजेयँ अभेयँ अनामं अठामं ॥
महा जोग जोगं महा काम कामं ॥
अलेखं अभेखं अनीलं अनादं ॥
परेयँ पवित्रं सदा निर्बिखादं ॥ ६ ॥

सु आदं अनादं अनीलं अनंतं ॥
अद्वैखं अभेखं महेसं महंतं ॥
न रोखं न सोखं न द्रोहं न मोहं ॥
न कामं न क्रोधं अजोनी अजोहं ॥ ७ ॥

परेयं पवित्रं पुनीतं पुराणं ॥
अजेयं अभेयं भविख्यं भवाणं ॥
न रोगं न सोगं सु नित्यं नवीनं ॥
अजायं सहायं परमं प्रबीनं ॥ ८ ॥

सु भूतं भविख्यं भवानं भवेयं ॥
नमों निर्बिकारं नमो निर्जुरयं ॥
नमो देव देवं नमो राज राजं ॥
निरालम्ब नित्यं सु राजाधिराजं ॥ ९ ॥

अलेखं अभेखं अभूतं अद्वैखं ॥
ना रागं न रंगं न रूपं न रेखं ॥
महादेव देवं महा जोग जोगं ॥
महा काम कामं महा भोग भोगं ॥ १० ॥

कहूं राजसं तामसं सातकेअं ॥
कहूं नार के रूप धारे नरेअं ॥
कहूं देवीअं देवतं दैत्य रूपं ॥
कहूं रूप अनेक धारे अनूपं ॥ ११ ॥

कहूं फूल ह्वै कै भले राज फूले ॥
कहूं भवर ह्वै कै भली भान्ति भूले॥
कहूं पवन ह्वै कै बहे वेगि ऐसे ॥
कहे मो न आवै कथों ताहि कैसे ॥ १२ ॥

कहूं नाद ह्वै कै भली भान्ति बाजे ॥
कहूं पारधी ह्वै कै धरे बान राजे ॥
कहूं मृग ह्वै कै भली भान्ति मोहे ॥
कहूं कामुकी जिउं धरे रूप सोहे ॥ १३ ॥

नहीं जान जाई कछू रूप रेखं ॥
कहां बास ताको फिरै कौन भेखं ॥
कहा नाम ताको कहा कै कहावै ॥
कहा मैं बखानों कहे मो न आवै ॥ १४ ॥

न ताको कोई तात मातं न भाइयं ॥
न पुत्रं न पोत्रं न दाया न दायं ॥
न नेहं न गेहं न सैनं न साथं ॥
महाराज राजं महा नाथ नाथं ॥ १५ ॥

परमं पुरानं पवित्र परेयं ॥
अनादं अनीलं असंभं अजेयं ॥
अभेदं अछेद पवित्रं प्रमाथं ॥
महा दीन दीनं महा नाथ नाथं ॥ १६ ॥

अदागं अदग्गं अलेखं अभेखं ॥
अनन्तं अनीलं अरूपं अद्वैखं ॥
महा तेज तेजं महा ज्वाल ज्वालं ॥
महा मन्त्र मन्त्रं महा काल कालं ॥ १७ ॥
करँ बाम चाप्यं कृपाणं करालं ॥
महा तेज तेजं बिराजै बिसालं ॥
महा दाढ़ गाढ़ं सु सोहं अपारं ॥
जिनै चर्बीयं जीव जग्यं हजारं ॥ १८ ॥
डमाडम्म डउरू सिता सेत छत्रं ॥
हाहा हूह हासं झमा झम अत्रं ॥
महा घोर शब्द बजे संख ऐसे ॥
प्रलय काल के काल की ज्वाल जैसे ॥ १९ ॥

रसावल छन्द ॥

घणं घण्ट बाजं ॥ धुणं मेघ लाजं ॥
भयो सद एवं ॥ हड़िओ नीरधेवं ॥ २० ॥
घुरं घुघरेयं ॥ धुणं नेवरेयं ॥
महा नाद नादं ॥ सुरं निबिखादं ॥ २१ ॥
सिरं माल राजं ॥ जखे रुद्र लाजं ॥
सुभं चारु चित्रं ॥ परम पवित्रं ॥ २२ ॥
महा गर्ज गरजं ॥ सुनै दूत लरजं ॥
स्रवं स्रोण सोहं ॥ महा मान मोहं ॥ २३ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

सृजे सेतजं जेरजं उत्भुजेवं ॥
रचे अण्डजं खण्ड ब्रह्मण्ड एवं ॥
दिसा बिदिसायं जिमी आसमाणं ॥
चतुर वेद कथिअं कुराणं पुराणं ॥ २४ ॥

रचे रैण दिवसं थपे सूर चन्दं ॥
ठटे दैव दानो रचे बीर वृंद ॥
करी लोह कलमं लिखिओ लेख माथं ॥
सबै जेर कीने बली काल हाथं ॥ २५ ॥

कई मेट डारे उसारे बनाए ॥
उपारे गढ़े फेर मेटे उपाए ॥
क्रिय काल जू की किन्हूं न पछानी ॥
घनिओ पै बिहै है घनिओ पै बिहानी ॥ २६ ॥

किते कृष्ण से कीट कोटै बनाए ॥
किते राम से मेटि डारे उपाए ॥
महादीन केते पृथी मांझ हूए ॥
समय आपनी आपनी अन्त मूए ॥ २७ ॥

जिते औलीआ अम्बीआ होइ बीते ॥
तितिओ काल जीता, न ते काल जीते ॥
जिते राम से कृष्ण हुइ बिसन आए ॥
तितिओ काल खापिओ न ते काल घाए ॥ २८ ॥

जिते इन्द्र से चन्द्र से होत आए ॥
तितिओ काल खापा न ते काल घाए ॥
जिते औलीआ अम्बीआ गौस ह्वै हैं ॥
सभै काल के अन्त दाढ़ा तलै हैं ॥ २९ ॥

जिते मानधातादि राजा सुहाए ।।
सभै बांध कै काल जेलै चलाए ।।
जिन्हैं नाम तांको उचारो उबारे ।।
बिना साम ताकी लखे कोट मारे ।। ३० ।।

रसावल छन्द ।। त्व प्रसादि ।।

चमकह कृपाणं ।। अभूतं भयाणं ।।
धुनं नेवराणं ।। घुरं घुंघराणं ।। ३१ ।।

चतुर बांह चारं ।। निजूटं सुधारं ।।
गदा पास सोहं ।। जमं मान मोहं ।। ३२ ।।

सुभं जीभ ज्वालं ।। सु दाढ़ा करालं ।।
बजी बम्ब संख ।। उठे नाद बंखं ।। ३३ ।।

सुभं रूप स्यामं ।। महा सोभ धामं ।।
छबे चार चित्रं ।। परेअं पवित्रं ।। ३४ ।।

भुजंग प्रयात छन्द ।।

सिरं सेत छत्रं सु सुभ्रं बिराजं ।।
लखै छैल छाया करे तेज लाजं ।।
विसाल्लाल नैनं महाराज सोहं ।।
ढिगं अंसुमालं हसै कोट कोहं ।। ३५ ।।

कहूं रूप धारे महाराज सोहं ।।
कहूं देव कन्यान के मान मोहं ।।
कहूं वीर ह्वै कै धरे बान पानं ।।
कहूं भूप ह्वै कै बजाए निसानं ।। ३६ ।।

रसावल छन्द ॥

धनुर बान धारे ॥ छके छैल भारे ॥
लए खग ऐसे ॥ महां वीर जैसे ॥ ३७ ॥
जुरे जंग जोरं ॥ करे जुद्ध घोरं ॥
कृपा निद्धि दयालं ॥ सदायं कृपालं ॥ ३८ ॥
सदा एक रूपं ॥ सभै लोक भूपं ॥
अजेयं अजायं ॥ सरणिअं सहायं ॥ ३९ ॥
तपै खग पानं ॥ महां लोक दानं ॥
भविख्यं भवेयं ॥ नमो निरजुरेयं ॥ ४० ॥
मधो मान मुंडं ॥ सुभं रुंड झुंडं ॥
सिरं सेत छत्रं ॥ लसं हाथ अत्रं ॥ ४१ ॥
सुणे नाद भारी ॥ त्रसे छत्र धारी ॥
दिसा बसत्र राजं ॥ सुणे दोख भाजं ॥ ४२ ॥
सुणे गद गदं ॥ अनन्तं बिहदं ॥
घटा जाणु स्यामं ॥ दुतं अभिरामं ॥ ४३ ॥
चतुर बाहु चारं ॥ करीटं सु धारं ॥
गदा संख चक्रं ॥ दिपै क्रूर बक्रं ॥ ४४ ॥

नराज छन्द ॥

अनूप रूप राजिअं ॥ निहार काम लाजिअं ॥
अलोक सोक सोभियं ॥ बिलोक लोक लोभियं ॥ ४५ ॥
चमक चंद्र सीसयं ॥ रहिओ लजाइ ईसयं ॥
सु सोभ नाग भूखणं ॥ अनेक दुष्ट दूखणं ॥ ४६ ॥
कृपाण पाण धारीअं ॥ करोर पाप टारीअं ॥
गदा गरिष्ट पाणिअं ॥ कमाण बाण ताणिअं ॥ ४७ ॥

सवद संख वजयं ।। घणंकि घुंघ्र गजयं ।।
सरन नाथ तोरियं ।। उवार लाज मोरियं ।। ४८ ।।

अनेक रूप सोहीअं ।। बिसेख देव मोहीयं ।।
अदेव देव देवलं ।। कृपा निधान केवलं ।। ४९ ।।

सु आदि अन्त एकयं ।। धरे सु रूप अनेकयं ।।
कृपाण पाण राजई ।। बिलोक पाप भाजई ।। ५० ।।

अलंकृतं सु देहयं ।। तनो मनो कि मोहय ।।
कमाण बाण धार ही ।। अनेक सत्रु टार ही ।। ५१ ।।

घमक्कि घुंघरं सुरं ।। नवं निनाद नूपरं ।।
प्रज्वाल बिजुलं जुलं ।। पवित्र परम निरमलं ।। ५२ ।।

तोटक छन्द ।। त्व प्रसादि ।।

नव नेवर नाद सुरं निर्मलं ।।
मुख बिज्जल ज्वाल घण प्रज्जुलं ।।
मदिरा कर मत्त महा भभकं ।।
बन मैं मनो बाघ बच्चा बबकं ।। ५३ ।।

भव भूत भविख भवान भवं ।।
कल कारण उबारण एक तुवं ।।
सभ ठौर निरन्तर नित्य नय ।।
मृदु मंगल रूप तुयं सु भयं ।। ५४ ।।

दृढ़ दाढ़ कराल द्वै सेत उधं ।।
जिह भाजत दुष्ट बिलोक जुधं ।।
मद मत्त कृपाण कराल धरं ।।
जय सद सुरासुरयं उचरं ।। ५५ ।।

नव किंकण नेवर नाद हूअँ ॥
चल चाल सभाचल कम्प भूअं ॥
घण घुंघर घंटण घोर सुरं ॥
चर चार चरा चरयं हुहरं ॥ ५६ ॥

चल चौदहूं चक्रन चक्र फिरं ॥
बढवं घटवं हरीअं सुभरं ॥
जग जीव जिते जलयं थलयं ॥
असको जु तवायसुअं मलयं ॥ ५७ ॥
घट भादव मास की जाण शुभं ॥
तन सांवरे रावरेअं हुलसं ॥
रद पङ्गति दामनीयं दमकं ॥
घन घुंघरु घंट सुरं घमकं ॥ ५८ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

घटा सावणं जाण स्याम सुहायं ॥
मणी नील नगयं लखं सीस न्यायं ॥
महा सुन्दर स्यामं महा अभिरामं ॥
महा रूप रूपं महा काम कामं ॥ ५९ ॥
फिरै चक्र चौदहूं पुरीअं मध्याणं ॥
इसो कौन बीअं फिरै आयसाणं ॥
कहो कुण्ट कौने बिखै भाज बाचै ॥
सभं सीस के संग श्री काल नाचै ॥ ६० ॥

करे कोट कोऊ धरे कोट ओटं ॥
बचैगो न किउहूं करै काल चोटं ॥
लिखं जंत्र केते पड़ं मंत्र कोटं ॥
बिना सरन तांकी नहीं और ओटं ॥ ६१ ॥

सबद संख वजयं ॥ घणंकि घुंघ्र गजयं ॥
सरन नाथ तोरियं ॥ उबार लाज मोरियं ॥ ४८ ॥

अनेक रूप सोहीअं ॥ बिसेख देव मोहीयं ॥
अदेव देव देवलं ॥ कृपा निधान केवलं ॥ ४९ ॥

सु आदि अन्त एकयं ॥ धरे सु रूप अनेकयं ॥
कृपाण पाण राजई ॥ बिलोक पाप भाजई ॥ ५० ॥

अलंकृतं सु देहयं ॥ तनो मनो कि मोहय ॥
कमाण बाण धार ही ॥ अनेक सत्रु टार ही ॥ ५१ ॥

घमक्कि घुंघरं सुरं ॥ नवं निनाद नूपरं ॥
प्रज्वाल बिजुलं जुलं ॥ पवित्र परम निरमलं ॥ ५२ ॥

तोटक छन्द ॥ त्व प्रसादि ॥

नव नेवर नाद सुरं निर्मलं ॥
मुख बिज्जल ज्वाल घण प्रज्जुलं ॥
मदिरा कर मत्त महा भभकं ॥
बन मैं मनो बाघ बच्चा बबकं ॥ ५३ ॥

भव भूत भविख भवान भवं ॥
कल कारण उबारण एक तुवं ॥
सभ ठौर निरन्तर नित्य नय ॥
मृदु मंगल रूप तुयं सु भयं ॥ ५४ ॥

दृढ़ दाढ़ कराल द्वै सेत उधं ॥
जिह भाजत दुष्ट बिलोक जुधं ॥
मद मत्त कृपाण कराल धरं ॥
जय सद सुरासुरयं उचरं ॥ ५५ ॥

नव किंकण नेव्रर नाद हूग्रँ ॥
चल चाल सभाचल कम्प भूग्रं ॥
घण घुंघर घंटण घोर सुरं ॥
चर चार चरा चरयं हुहरं ॥ ५६ ॥

चल चौदहूं चक्रन चक्र फिरं ॥
बढवं घटवं हरीग्रं सुभरं ॥
जग जीव जिते जलयं थलयं ॥
ग्रसको जु तवायसुग्रं मलयं ॥ ५७ ॥
घट भादव मास की जाण शुभं ॥
तन सांवरे रावरेग्रं हुलसं ॥
रद पङ्क्ति दामनीयं दमकं ॥
घन घुंघरु घंट सुरं घमकं ॥ ५८ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

घटा सावणं जाण स्याम सुहायं ॥
मणी नील नगयं लखं सीस न्यायं ॥
महा सुन्दर स्यामं महा ग्रभिरामं ॥
महा रूप रूपं महा काम कामं ॥ ५९ ॥
फिरै चक्र चौदहूं पुरीग्रं मध्याणं ॥
इसो कौन बीग्रं फिरै ग्रायसाणं ॥
कहो कुण्ट कौने बिखै भाज बाचै ॥
सभं सीस के संग श्री काल नाचै ॥ ६० ॥
करे कोट कोऊ धरे कोट ग्रोटं ॥
बचैगो न किउहूं करै काल चोटं ॥
लिखं जंत्र केते पड़ं मंत्र कोटं ॥
बिना सरन तांकी नहीं ग्रौर ग्रोटं ॥ ६१ ॥

लिखं जंत्र थाके पढ़ं मंत्र हारे ॥
करे काल ते अन्त लै, कै बिचारे ॥
कितिओ तंत्र साधे जु जनमं बितायो ॥
भए फोकटं काज एकै न आयो ॥ ६२ ॥

किते नास मूंदे भए ब्रह्मचारी ॥
किते कण्ठ कंठी जटा सीस धारी ॥
किते चीर कानं जुगीसं कहायं ॥
सबै फोकटं धरम कामं न आयं ॥ ६३ ॥

मधु कीटभं राछसेसं बलीअं ॥
समय आपनी काल तेऊ दलीअं ॥
भए सुम्भ नैसुम्भ स्रोणंत बीजं ॥
तेऊ काल कीने पुरेजं पुरेजं ॥ ६४ ॥

बली पृथीअं, मानधाता महीपं ॥
जिनै रत्थ चक्रं कीए सात दीपं ॥
भुजं भीम भरथं जगं जीत डंण्ड्यं ॥
तिनै अन्त के अन्त को काल खण्ड्यं ॥ ६५ ॥

जिनै दीप दीपं दुहाई फिराई ॥
भुजा दण्ड दै छोणि छत्रं छिनाई ॥
करे यज्ञ कोटं जसं अनेक लीते ॥
वहै बीर बंके बली काल जीते ॥ ६६ ॥

कई कोट लीने जिनै दुर्ग ढाहे ॥
किते सूरबीरान के सैन गाहे ॥
किते जंग कीने सु साके पवारे ॥
वहै दीन देखे गिरे काल मारे ॥ ६७ ॥

जिनै पातिसाही करी कोट जुग्यं ॥
रसं आन रस्सं भली भांति भुग्य ॥
वहै अन्त को पाव नांगे पधारे ॥
गिरे दीन देखे हठी काल मारे ॥ ६८ ॥
जिनैं खण्डोअं दण्ड धारं अपारं ॥
करे चंद्रमा सूर चेरे दुआरँ ॥
जिनै इन्द्र से जीत कै छोड ढारे ॥
वहै दीन देखे गिरे काल मारे ॥ ६९ ॥

रसावल छन्द ॥

जिते राम हुए ॥ सबै अन्त मूए ॥
जिते कृष्ण ह्वै हैं ॥ सबै अन्त जै हैं ॥ ७० ॥
जिते देव होसी ॥ सबै अन्त जासी ॥
जिते बोध ह्वै हैं ॥ सबै अन्त छै हैं ॥ ७१ ॥
जिते देव रायं ॥ सबै अन्त जायं ॥
जिते दईत एसं ॥ तितिओ काल लेसं ॥ ७२ ॥
नरसिंहावतारं ॥ वहै काल मारं ॥
बडो डण्ड धारी ॥ हनिओ काल भारी ॥ ७३ ॥
दिजैं बावनेयं ॥ हनिओ काल तेयं ॥
महा मच्छ मुंडं ॥ फधिओ काल झुण्डं ॥ ७४ ॥
जिते होइ बीते ॥ तिते काल जीते ॥
जिते सरणि जै हैं ॥ तितिओ राख लै हैं ॥ ७५ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

बिना सरन ताकी न अउरै उपायं ॥
कहा देव दईत कहा रङ्क रायं ॥

कहा पातसाहं कहा उमरायं ॥
बिना ओट ताँकी न कोटै उपायं ॥ ७६ ॥

जिते जीव जन्तं दुनिय उपायं ॥
सबै अन्त कालं बली काल घायं ॥

बिना सरन ताकी नहीं और ओटं ॥
लिखे जन्त्र केते पढ़े मन्त्र कोटं ॥ ७७ ॥

नराज छन्द ॥

जितेक राज रंकयं ॥ हने सु काल बकयं ॥
जितेक लोकपालयं ॥ निदान काल दालयं ॥ ७८ ॥
कृपाण पाण जे जपै ॥ अन्नत थाट ते थपै ॥
जितेक काल ध्याइ है ॥ जगत जीत जाइ हैं ॥७९॥
विचित्र चारु चित्रयं ॥ परमयं पवित्रयं ॥
अलोक रूप राजियं ॥ सुणे सु पाप भाजियं ॥८०॥
बिसाल लाल लोचनं॥बिअन्त पाप मोचनं ॥
चमक चंद्र चारीअं ॥ अघी अनेक तारीअं ॥८१॥

रसावल छन्द ॥

जिते लोकपाल ॥ तिते जेर कालं ॥
जिते सूर चंद्रं ॥ कहां इन्द्र बिन्द्रं ॥ ८२ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

फिरे चौदहूं लोकयं काल चक्रं ॥
सबै नाथ नाथे भ्रमं भौंह बक्रं ॥

कहा राम कृष्णं कहा चंद सूरं ॥
सबै हाथ बांधे खरे काल हजूरं ॥ ८३ ॥

सवैया ॥

काल ही पाय भयो भगवान सु,
जागत या जग जांकी कला है ॥
काल ही पाय भयो ब्रह्मा सिव,
काल ही पाइ भयो जुगीआ है ॥
काल ही पाय सुरासुर गंधर्व,
जच्छ भुजंग दिसा बिदिसा है ॥
और सु काल सबै बस काल के,
एक ही काल अकाल सदा है ॥ ८४ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

नमो देव देवँ नमो खड़गधारं ॥
सदा एक रूपं सदा निर्बिकारं ॥
नमो राजसं सातकं तामसेअं ॥
नमो निर्विकारं नमो निर्जुरेअं ॥ ८५ ॥

रसावल छन्द ॥

नमो बाण पाणं ॥ नमो निर्भयाणं ॥
नमो देव देवं ॥ भवाणं भवेअं ॥ ८६ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

नमो खग खंडं कृपाणं कटारं ॥
सदा एक रूपं सदा निर्बिकारं ॥
नमो बाण पाणं नमो दण्ड धारयं ॥
जिनै चौदहूं लोक जोतं बिथारयं ॥ ८७ ॥
नमस्कारयं मोर तीरं तुफंगं ॥
नमो खग अदगं अभेयं अभंगं ॥

गदाय गरिष्टं नमो सैहथीयं ॥
जिनै तुलीयं बीर बीयो न बीयं ॥ ८८ ॥

रसावल छन्द ॥

नमो चक्र पाणं ॥ अभूतं भयाणं ॥
नमो उग्र दाढ़ं ॥ महा ग्रिष्ट गाढ़ं ॥ ८९ ॥

नमो तीर तोपं ॥ जिनै सत्रु घोपं ॥
नमो धोप पट्टं ॥ जिनै दुष्ट दट्टं ॥ ९० ॥

जिते सस्त्र नामं ॥ नमस्कार तामं ॥
जिते अस्त्र भेयं ॥ नमस्कार तेयं ॥ ९१ ॥

सवैया ॥

मेरु करो तृण ते मुहि जाहि,
गरीबनिवाज़ न दूसर तो सो ॥
भूल छिमो हमरी प्रभु आपन,
भूलनहार कहूं . कोऊ मो सो ॥
सेव करी तुमरी तिनके, सभ
ही गृह देखीअत द्रव्य भरो सो ॥
या कल मैं सब काल कृपाण के,
भारी भुजान को भारी भरोसो ॥ ९२ ॥

सुन्भ निसुम्भ से कोट निसाचर,
जाहि छिनेक बिखे हन डारे ॥
धूमर-लोचन चंड औ मुंड से,
माहख से पल बीच निवारे ॥
चामर से रण चिच्छर से,
रकतिच्छर से झट दै झझकारे ॥

ऐसो सु साहिब पाइ, कहां
परवाह रही इह दास तिहारे ॥ ६३ ॥

मुण्डहु से मधु–कीटभ से, मुर
से अघ से जिनि कोटि दले हैं ॥
ओट करी कबहुं न जिनै, रण
चोट परी पग द्वय न टले हैं ॥
सिंध बिखै जे न बूडे निसाचर,
पावक बाण बहे न जले हैं ॥
ते असि तोर बिलोक अलोक सु,
लाज को छाडिकै भाज चले हैं ॥ ६४ ॥

रावण से महरावण से,
घटकानहु से पलबीच पछारे ॥
बारदनाद अकम्पन से जग,
जंग जुरे जिन सिउ जम हारे ॥
कुम्भ अकुम्भ से जीत सबै,
जग सातहुं सिंध हथियार पखारे ॥
जे जे हुते अकटे बिकटे,
सु कटे करि काल कृपाण के मारे ॥६५॥

जो कहूं काल ते भाजके बाचीअत,
तो किह कुंट कहो भजि जईऐ ॥
आगेहूं काल धरै असि गाजत,
छाजत है जिह ते नसि अईऐ ॥
ऐसो न कै गयो कोई सु दाव रे,
जाहि उपाव सो घाव बचईऐ ॥
जांते न छूटीऐ मूढ़ कहूं, हस
तांकी क्यों न सरणागति जईऐ ॥ ६३ ॥

कृष्ण औ बिष्णु जपे तुहि कोटिक,
राम रहीम भली बिधि ध्यायो ॥
ब्रह्म जप्यो अरु सम्भु थप्यो,
तिह ते तोहिको किन्हूं न बचायो ॥

कोट करी तपसा दिन कोटिक,
काहूं न कौडी को काम कढायो ॥
कामकु मन्त्र कसीरे के काम न,
काल को घाउ किन्हूं न बचायो । ९७ ॥

काहे को कूर करै तपसा
इनकी, कोऊ कौडी के काम न ऐहै ॥
तोहि बचाय सकै कहु कैसे
कै, आपन घाव बचाइ न ऐहै ॥

कोप कराल की पावक कुण्ड मैं,
आप टंगिओ तिम तोहि टंगैहै ॥
चेत रे चेत अजो जीअ मैं जड़,
काल कृपा बिनु काम न ऐहै ॥ ९८ ॥

ताहि पछानत है न महा पसु,
जाको प्रतापु तिहूं पुर माही ॥
पूजत है परमेसर कै,
जिह कै परसै परलोक पराही ॥

पाप करो परमारथ कै,
जिह पापन ते अति पाप लजाही ॥
पाइ परो परमेसर के जड़,
पाहन मैं परमेसर नाही ॥ ९९ ॥

मोन भजे नही मान तजे,
नही भेख सजे नही मूंड मुंडाए।
कंठ न कंठी कठोर धरे,
नही सीस जटान के जूट सुहाए।
साचु कहों सुन लै चित्त दै,
बिनु दीन दयाल की स्रम सिधाए।
प्रीति करे प्रभु पायत है,
कृपाल न भीजत लांड कटाए॥ १००॥

कागद दीप सभै करिकै,
अरु सात समुन्द्रन की मसु कैहों।
काट बनासपती सगरी,
लिखबे हूं के लेखन काज बनै हों॥
सारसुती बकता करिकै, जुगि
कोटि गनेस कै हाथ लिखै हों।
काल कृपान बिना बिनती
न तऊ तुम को प्रभु नैक रिझैहों॥ १०१॥

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे श्री काल जी की स्तुति
प्रथम अध्याय संपूर्णम् शुभमस्तु॥ १॥ अफजू १३६॥

चौपई॥

तुमरो महिमा अपर अपारा॥
जाका लहिओ न किनहूं पारा॥
देव देब राजन के राजा॥
दीन दयाल गरीब निवाजा॥ १॥

दोहरा ॥

मूक उचरै शास्त्र खट, पिंगु गिरन चढ़ि जाइ ॥
अंध लखै बधरो सुनै, जौ काल कृपा कराइ ॥ २ ॥

चौपई ॥

कहां बुद्धि प्रभ तुच्छ हमारी ॥
बरन सकै महिमा जु तिहारी ॥
हम न सकत कर सिफत तुमारी ॥
आप लेहु तुम कथा सुधारी ॥ ३ ॥

कहा लगै इह कीट बखानै ॥
महिमा तोर तुही प्रभु जानै ॥
पिता जन्म जिम पूत न पावै ॥
कहां तवन का भेद बतावै ॥ ४ ॥

तुमरी प्रभा तुमै बनि आई ॥
औरन ते नही जात बताई ॥
तुमरी क्रिया तुमहूं प्रभु जानो ॥
ऊच नीच कस सकत बखानो ॥ ५ ॥

सेसनाग सिर सहस बनाई ॥
द्वै सहंस रसनाह सुहाई ॥
रटत अब लगे नाम अपारा ॥
तुमरो तोऊ न पावत पारा ॥ ६ ॥

तुमरी क्रिया कहां कोऊ कहै ॥
समझत बात उरझ मति रहै ॥
सूछम रूप न बरना जाई ॥
बिरध सरूपहि कहो बनाई ॥ ७ ॥

तुमरी प्रम भगति जब गहिहौ ॥
छोर कथा सभ ही तब कहिहो ॥
अब मै कहों सु अपनी कथा ॥
सोढी बंस उपजया यथा ॥ ८ ॥

दोहरा ॥

प्रथम कथा संछेप ते, कहों सु हितु चितु लाइ ॥
बहुर बडो बिसथार कै, कहिहौं सभो सुनाइ ॥ ६ ॥

चौपई ॥

प्रथम काल जब करा पसारा ॥
ओंकार ते सृसट उपारा ॥
कालसैण प्रथमे भयो भूपा ॥
अधिक अतुल बलि रूप अनूपा ॥ १० ॥

काल केत दूसर भूअ भयो ॥
क्रूरबरस तीसर जग ठयो ॥
कालधुज चतुरथ नृप सोहै ॥
जिह ते भयो जगत सभ को है ॥ ११ ॥

सहसराछ] जांके सुभ सोहै ॥
सहस पाद जांके तन मो है ॥
शेषनाग पर सोइबो करै ॥
जग तहि शेष शाइ उचरै ॥ १२ ॥

एक स्रवण ते मैल निकारा ॥
तांते मधु कीटभ तन धारा ॥
दुतीय कान ते मैलु निकारी ॥
तांते भई सृस्टि इह सारी ॥ १३ ॥

तिम के काल बहुर बध करा ॥
तिन को मेद समुंद मो परा ॥
चिकन तास जल पर तिर रही ॥
मेधा नाम तबहि ते कही ॥ १४ ॥
साधु कर्म जे पुरख कमावै ॥
नाम देवता जगत कहावै ॥
कुकृत कर्म जे जग मैं करहीं ॥
नाम असुर तिन को सब धरहीं ॥ १५ ॥
बहु बिथार कहां लगै बखानीअत ॥
ग्रन्थ बढन ते अति डर मानीअत ॥
तिन ते होत बहुत नृप आए ॥
दच्छ प्रजापति जिन उपजाए ॥ १६ ॥
दस सहस्त्र तिहि गृह भई कन्या ॥
जिह समान कह लगै न अन्या ॥
काल क्रिया ऐसी तह भई ॥
ते सब बिआहि नरेसन दई ॥ १७ ॥

दोहरा ॥

बनिता कदरू दिति अदिति, ए ऋषि बरी बनाय ॥
नाग नागरिपु देव सभ, दईत लए उपजाय ॥ १८ ॥

चौपई ॥

ता ते सूरज रूप को धरा ॥
जा ते बंस प्रचुर रवि करा ॥
जौ तिनके कहि नाम सुनाऊं ॥
कथा बढन ते अधिक डराऊं ॥ १९ ॥

तिनके बंस बिखै रघु भयो ॥
रघुबंसहि जिह जगहि चलयो ॥
तां ते पुत्र होत भयो अजबर ॥
महारथी अरु महा धनुर धर ॥ २० ॥

जब तिन भेस जोग को लयो ॥
राज पाट दशरथ को दयो ॥
होत भयो वह महा धनुर धर ॥
तीन त्रियान बरी जिह रुचि कर ॥ २१ ॥

प्रथम जयो तिह राम कुमारा ॥
भरत लच्छमन शत्रुबिदारा ॥
बहुत काल तिन राज कमायो ॥
काल पाइ सुर पुरहि सिधायो ॥ २२ ॥

सिय सुत बहुर भए दुइ राजा ॥
राज पाट उन ही कउ छाजा ॥
मद्र देस एश्वर्जा बरी जब ॥
भांति भांति के यज्ञ कीए तब ॥ २३ ॥

तही तिने बांधे दुइ पुरवा ॥
एक कसूर दुतीअ लहुरवा ॥
अधिकपुरी ते दोऊ बिराजी ॥
निरख लंक अमरावति लाजी ॥ २४ ॥

बहुत काल तिन राज कमायो ॥
जाल काल, ते अन्त फसायो ॥
तिन ते पुत्र पौत्र जे वए ॥
राज करत इह जग को भए ॥ २५ ॥

कहा लगे ते बरन सुनाऊं ॥
तिन के नाम न संख्या पाऊं ॥
होत चहूं जुग मैं जे आए ॥
तिन के नाम न जात गनाए ॥ २६ ॥

जौ अब तउ कृपा बल पाऊं ॥
नाम जथा मति भाख सुनाऊं ॥
कालकेतु अर कालराइ भन ॥
जिन ते भए पुत्र घर अनगन ॥ २७ ॥

कालकेतु भयो बली अपारा ॥
कालराइ जिनि नगर निकारा ॥
भाज सनौढ देस ते गए ॥
तहीं भूपजा बिआहत भए ॥ २८ ॥

तिह ते पुत्र भयो जो धामा ॥
सोढि राइ धरा तिहि नामा ॥
वंस सनौढ ता दिन ते थीआ ॥
परम पवित्र पुरख जू कीआ ॥ २९ ॥

तांते पुत्र पौत्र होइ आए ॥
ते सोढी सब जगत कहाए ॥
जग भै अधिक सु भए प्रसिद्धा ॥
दिन दिन तिनके धन की बृद्धा ॥ ३० ॥

राज करत भए विविध प्रकारा ॥
देस देस के जीत नृपारा ॥
जहां तहां तिह धर्म चलायो ॥
अत्र पत्र कह सीस ढुरायो ॥ ३१ ॥

राजसूय बहु बारन किये ॥
जीत जीत देसेस्वर लिये ॥
बाजमेध बहु बारन करे ॥
सकल कलूष निज कुल के हरे ॥ ३२ ॥
बहुर बंस में बढो बिखाधा ॥
मेट न सका कोऊ तिह साधा ॥
बिचरे बीर बनैत अखण्डल ॥
गहि गहि चले भिरन रण मण्डल ॥ ३३ ॥
धन अर भूमि पुरातन बैरा ॥
जिनका मूआ करत जग घेरा ॥
मोह वाद अहंकार पसारा ॥
काम क्रोध जीता जग सारा ॥ ३४ ॥

दोहरा ॥

धनि धनि धन को भाखीऐ, जांका जगतु गुलाम ॥
सब निर्खत यां को फिरै, सब चल करत सलाम ॥ ३५ ॥

चौपई ॥

काल न कोऊ करन सुमारा ॥
वैर वाद अहंकार पसारा ॥
लोभ मूल इह जग को हूआ ॥
जासो चाहत सबै को मूआ ॥ ३६ ॥

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रंथे शुभ बंस वर्णनं
नाम द्वितीयाध्याय समाप्तमसतु सुभमसतु॥२॥अफजू ॥१३७॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

रचा बैर बादं बिधाते अपारं ॥
जिसै साध साकयो न कोई सुधारं ॥

बली कामरायं महा लोभ मोहं ॥
गयो कौन बीरं सु यां ते अलोहं ॥ १ ॥
तहां बीर बंके बकै आप मद्धं ॥
उठे शस्त्र लै लै मचा जुद्ध सुद्धं ॥
कहूं खपरी खोल खण्डे अपारं ॥
नचे बीर बैताल डउरू डकारं ॥ २ ॥
कहूं ईस सीसं पुऐ रुण्ड मालं ॥
कहूं डाक डउरू कहूंकं बितालं ॥
चवी चावडीयं किलंकार कंकं ॥
गुथी लुत्थ जुत्थं बहे बीर बंकं ॥ ३ ॥
परी कुट्ट कुट्टं रुले तच्छ मुच्छं ॥
रहे हाथ डारे उभय उर्द्ध मुच्छं ॥
कहूं खोपरी खोल खिगं खतंगं ॥
कहूं खत्रियं खग्ग खेतं निखंगं ॥ ४ ॥
चवी चांवडी डाकनी डाक मारे ॥
कहूं भैरवी भूत भैरों बकारे ।
कहूं बीर बैताल बंके बिहारं ॥
कहूं भूत प्रेतं हसे मासहारं ॥ ५ ॥

रसावल छन्द ॥

महांबीर गज्जे ॥ सुणै मेघ लज्जे ॥
झंडा गड गाढे ॥ मंडे रोस बाढे ॥ ६ ॥
कृपाणं कटारं ॥ भिरे रोस धारं ॥
महाबीर बंकं ॥ भिरे भूम हंकं ॥ ७ ॥
मचे सूर शस्त्रं ॥ उठी झार अस्त्रं ॥
कृपाणं कटारं ॥ परी लोह मारं ॥ ८ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

हलब्बी जुनब्बी सरोही दुधारी ॥
बही कोपकाती कृपाणं कटारी ॥
कहूं सैंहथीअं कहूं सुद्ध सेलं ॥
कहूं सेल सांगं भई रेल पेलं ॥ ९ ॥

नराज छन्द ॥

सरोष सूर साजियं ॥ बिसार संक बाजियं ॥
निशङ्क शस्त्र मारही ॥ उतार अङ्ग डारहीं ॥ १० ॥
कछू न कान राखहीं ॥ सु मार मार भाखहीं ॥
सु हांक हाठ रेलयं ॥ अनन्त शस्त्र झेलयं ॥ ११ ॥
हजार हूर अम्बरं ॥ विरुद्ध कै स्वयम्बरं ॥
करूर भान्ति डोलही ॥ सु मार मार बोलही ॥ १२ ॥
कहूं कि अंग कट्टियं ॥ कहूं सु रोह पट्टियं ॥
कहूं सु मास मुच्छियं ॥ गिरे सु तच्छ मुच्छियं ॥ १३ ॥
ढमक्क ढोल ढालयं ॥ हरोल हाल चालयं ॥
झटाक झट्ट बाहियं ॥ सु बीर सैन गाहियं ॥ १४ ॥
नवं निसाण बाजिअं ॥ सुबीर धीर गाजिअं ॥
कृपाण बाण बाहही ॥ अजात अंग लाहही ॥ १५ ॥
विरुद्ध क्रुद्ध राजियं ॥ न चार पैर भाजियं ॥
सम्भार सस्त्र गाजही ॥ सुनाद मेघ लाजही ॥ १६ ॥
हलंक हांक मारही ॥ सरक सस्त्र झारही ॥
भिरे बिसारि सोकियं ॥ सिधार देव लोकियं ॥ १७ ॥

रिसे विरुद्ध वीरयं ॥ सु मारि झारि तीरयं ॥
शब्द संख बज्जियं ॥ सु बीर धीर सज्जियं ॥ १८ ॥

रसावल छन्द ॥

तुरी संख बाजे ॥ महाबीर साजे ॥
नचे तुंद ताजी ॥ मचे सूर गाजी ॥ १९ ॥
झिमी तेज तेगं ॥ मनो बिज्ज बेगं ॥
उठै नद्द नादं ॥ धुन निर्विखादं ॥ २० ॥
तुटै खग्ग खोलं ॥ मुखं मार बोलं ॥
धका धीक धक्कं ॥ गिरे हक्क–बक्कं ॥ २१ ॥
दलं दीह गाहं ॥ अधो अंग लाहं ॥
प्रयोघ प्रहारं ॥ बकै मार मारं ॥ २२ ॥
नदी रक्त पूरं ॥ फिरी गैण हूरं ॥
गर्ज गैण काली ॥ हसी खप्पराली ॥ २३ ॥
महा सूर सोहं ॥ मण्डे लोह क्रोहं ॥
महा गरब गजियं ॥ धुनं मेघ लजियं ॥ २४ ॥
छके लोह छकं ॥ मुखं मार बकं ॥
मुखं मुच्छ बंकं ॥ भिरे छाड संकं ॥ २५ ॥
हकंहाक बाजी ॥ घिरी सेण साजी ॥
चिरे चार ढूके ॥ मुखं मार कूके ॥ २६ ॥
रुके सूर सांगं ॥ मनो सिंद्ध गंगं ॥
ढहे ढाल ढक्क ॥ कृपाणं कड़क्कं ॥ २७ ॥
हक हाक बाजी ॥ नचे तुंद ताजी ॥
रसं रुद्र पागे ॥ भिरे रोस जागे ॥ २८ ॥
गिरे सुद्ध सेलं ॥ भई रेल पेलं ॥
पलंहार नच्चे ॥ रण बीर मच्चे ॥ २९ ॥

हसे मासहारी ॥ नचे भूत भारी ॥
महा ढीठ ढूके ॥ मुखं मार कूके ॥ ३० ॥
गजै गैण देवी ॥ महा अंस भेवी ॥
भले भूत नाचं ॥ रसं रुद्र राचं ॥ ३१ ॥
भिरैं बैर रुज्झै ॥ महा जोध जुज्झै ॥
झंडा गड्ड गाढे ॥ बजे बैर बाढे ॥ ३२ ॥
गजं गाह बाधे ॥ धनुर बाण साधे ॥
बहे आप मद्धं ॥ गिरे अद्ध अद्ध ॥ ३३ ॥
गजं बाज जुज्झे ॥ बली बैर रुज्झे ॥
निर्भय शस्त्र बाहैं ॥ उभय जीत चाहैं ॥ ३४ ॥
गजे आन गाजी ॥ नचे तुन्द ताजी ॥
हकं हाक बज्जी ॥ फिरै सैन भज्जी ॥ ३५ ॥
मदं मत्त माते ॥ रसं रुद्र राते ॥
गजं जूह साजे ॥ भिरे रोस बाजे ॥ ३६ ॥
झमी तेज तेगं ॥ घण बिज बेगं ॥
बहे बार बैरी ॥ जलं ज्यों गंगैरी ॥ ३७ ॥
आपो आप बाहं ॥ उभय जीत चाहं ॥
रसं रुद्र राते ॥ महा मत्त माते ॥ ३८ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

मचे बीर बीरं अभूतं भयाणं ॥
बजी भेर भुंकार धुक्के निसाणं ॥
नवं नद्द नीसाण गज्जे गहीरं ॥
फिरै रुण्ड मुण्डं तनं तच्छ तीरं ॥ ३९ ॥

बहे खग्ग खेतं स्यालं खतंगं ॥
रुले तच्छ मुच्छं महा जोध जंगं ॥

बन्धे बीर बाना बड़े ऐंठ वारे ॥
घुमै लोह घुट्ट मनो मत्तवारे ॥ ४० ॥
उठी कूह जूहं समरसार गज्जिअं ॥
किधौ अन्त के काल को मेघ बज्जिअं॥
भई तीर भीरं कमाणं कड़क्किअं ॥
बजे लोह क्रोहं महा जंग मच्चिअं ॥ ४१ ॥
बिरच्चे महा जंग जोधा जुआणं ॥
खुले खग्ग खत्री अभूतं भयाणं ॥
बली जुज्झ रुज्झै रसं रुद्र रत्ते ॥
मिले हत्थ बक्खं महा तेज तत्ते ॥ ४२ ॥
झमी तेज तेगं सु रोसं प्रहारं ॥
रुले रुंड मुण्डं उठी सस्त्र झारं ॥
बबकंत वीरं भभकंत घायं ॥
मनो जुद्ध इन्द्रं जुटयो बृत्तरायं ॥ ४३ ॥
महा जुद्ध मचयं गहा सूर गाजे ॥
आप? आप मैं सस्त्र सों सस्त्र बाजे ॥
उठे झार सांगं मचे लोह क्रोहं ॥
मनो खेल बासंत माहंत सोहं ॥ ४४ ॥

रसावल छन्द ॥

जिते वैर रुज्झं ॥ तिते अन्त जूज्झं ॥
जिते खेत भाजे ॥ तिते अन्त लाजे ॥ ४५ ॥
तुटे देह बरमं ॥ छुटी हाथ चरमं ॥
कहुं खेत खोलं ॥ गिरे सूर टोलं ॥ ४६ ॥
कहुं मुच्छ मुक्खं ॥ कहूं सस्त्र सक्खं ॥
कहूं खोल खग्गं ॥ कहूं परम पग्गं ॥ ४७ ॥

गहे मुच्छ बकी ॥ मंडे आन हंकी ॥
ढका ढुक्क ढालं ॥ उठे हाल चालं ॥ ४८ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

खुले खग्ग खूनी महा बीर खेतं ॥
नचे बीर बैतालयं भूत प्रेतं ॥
बजे डंक डउरू उठे नाद सखं ॥
मनो मल्ल जुट्टे महा हत्थ बंक्खं ॥ ४९ ॥

छपय छन्द ॥

जिन सूरन संग्राम, सबल सामुहि ह्वै मण्डिओ ॥
तिन सुभटन ते एक काल, कोऊ जीअत न छडिओ ॥
सब खत्री खग खण्ड, खेत भू मण्डप आहुट्टे ॥
सार धार धर घूम, मुक्त बंधन ते छुट्टे ॥
ह्वै टूक टूक जुज्झै सबै पांव न पाछै डारीअं ॥
जयकार अपार सुधार हूअं, बासव लोक सिधारीअं ॥५०॥

चौपई ॥

इह विधि मचा घोर संग्रामा ॥
सिधए सूर सूरि के धामा ॥
कहा लगै वह कथौं लराई ॥
आपन प्रभा न बरनी जाई ॥ ५१ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

जवी सर्ब जीते कुसी सर्ब हारे ॥
बचे जे बली प्रान लै के सिधारे ॥

चतुर बेद पठयं कियो कासि बासं ॥
घने बरख कीने तहां ही निवासं ॥ ५२ ॥

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे लवों कुशी जुद्ध बरननं नाम तृतीयाध्याय समाप्तमस्तु शुभमस्तु ॥ ३ ॥ अफजू ॥ १८६ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

जिनै बेद पठिओ सु बेदी कहाए ॥
तिनै धर्म कै कर्म नीके हलाए ॥
पठे कागदं मद्र राजा सुधारं ॥
अपो आप मो बैर भाव बिसारं ॥ १ ॥
नृपं मुकलिअं दूत सो कासि आयं ॥
सबै बेदियं भेद भाखे सुनायं ॥
सबै बेद पाठी चले मद्र देसं ॥
प्रणामं कीयो आन कै कै नरेसं ॥ २ ॥
धुनं बेद की भूप तां ते कराई ॥
सबै पास बैठे सभा बीच भाई ॥
पढ़े साम बेदं जुजर बेद कत्थं ॥
रिगं बेद पठिअं करे भाव हत्थं ॥ ३ ॥

रसावल छन्द ॥

अथर बेद पठयं ॥ सुणे पाप नठयं ॥
रहा रीझ राजा ॥ दिया सर्ब साजा ॥ ४ ॥
लयो बन बासं ॥ महा पाप नासं ॥
रिखं भेष कीयं ॥ तिसै राज दीयं ॥ ५ ॥

रहे होर लोगं ।। तजे सर्ब सोगं ।।
धमं धाम त्यागे ।। प्रभं प्रेम पागे ।। ६ ।।

अड़िल्ल

बेदी भए प्रसन्न, राज कह पाइकै ।।
देत भयो बरदान, हीऐ हुलसाइकै ।।
जब नानक कलि मै हम,आन कहाइ हैं ।।
हो जगत् पूज करि तोहि,परम पद पाइ हैं ।। ७ ।।

दोहरा ।।

लवी राज दे बन गए, बेदीअन कीनो राज ।।
भांति भांति तिनि भोगीयं, भूअ का सकल समाज ।।८।।

चौपई ।।

तृतीय बेद सुनबो तुम किया ।।
चतुर बेद सुनि भूअ को दिया ।।
तीन जन्म हमहूं जब धरि हैं ।।
चौथे जन्म गुरू तुहि करिहैं ।। ९ ।।
उत राजा काननहि सिधायो ।।
इत इन राज करत सुख पायो ।।
कहा लगे करि कथा सुनाऊं ।।
ग्रन्थ बढन ते अधिक डराऊं ।। १० ।।

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे बेद पाठ भेटराज चतुर्थ अध्याय समाप्तमस्तु शुभमस्तु ।। ४ ।। अफजू ।। १९९ ।।

नराज छन्द ।।

बहुर बिखाद बाधियं ।। किनी न ताहि साधियं ।।
क्रम काल यौं भई ।। सु भूमि बंस ते गई ।। १ ।।

दोहरा ॥

बिप्र करत भए सूद्र बृत्ति, छत्री बैसन कर्म ॥
बैस करत भए छत्रि बृत्ति, सूद्र सु दिज को धर्म ॥ २ ॥

चौपई ॥

बीस गांव तिनके रहि गए ॥
जिन मो करत कृसानी भए ॥
बहुत काल इह भांति बितायो ॥
जन्म समय नानक को आयो ॥ ३ ॥

दोहरा ॥

तिन वेदीअन के कुल बिखै, प्रगटे नानक राय ॥
सब सिक्खन को सुख दये, जहं तहं भए सहाय ॥ ४ ॥

चौपई ॥

तिन इह कल मो धर्म चलायो ॥
सब साधन को राहु बतायो ॥
जो ताँके मारग महि आए ॥
ते कबहूं नहीं पाप संताए ॥ ५ ॥
जे जे पन्थ तवन के परे ॥
पाप ताप तिनके प्रभ हरे ॥
दूख भूख कबहूं न संताए ॥
जाल काल के बीच न आए ॥ ६ ॥
नानक अंगद को बपु धरा ॥
धर्म प्रचुर इह जग मो करा ॥

अमरदास पुनि नाम कहायो ॥
जन दीपक ते दीप जगायो ॥ ७ ॥

जब बरदान समय वहु आवा ॥
रामदास तब गुरु कहावा ॥
तिह बरदान पुरातन दीया ॥
अमरदास सुर पुरि मगु लिया ॥ ८ ॥

श्री नानक अंगदि करि माना ॥
अमरदास अंगद पहिचाना ॥
अमरदास रामदास कहायो ॥
साधनि लखा मूढ़ नहि पायो ॥ ९ ॥

भिन्न भिन्न सबहूं कर जाना ॥
एक रूप किनहूं पहिचाना ॥
जिन जाना तिन ही सिधि पाई ॥
बिन समझे सिधि हाथ न आई ॥ १० ॥

रामदास हरि सो मिलि गये ॥
गुरुता देत अरजनहि भये ॥
जब अरजन प्रभु लोक सिधाए ॥
हरि गोविन्द तिह ठां ठहिराए ॥ ११ ॥

हरिगोविन्द प्रभु लोक सिधारे ॥
हरीराय तिह ठां बैठारे ॥
हरीकृष्ण तिन के सुत वए ॥
तिन ते तेगबहादर भए ॥ १२ ॥

तिलक जंञू राखा प्रभ ताका ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥

साधनि हेति इती जिनि करी ॥
सीसु दिया पर सी न उचरी ॥ १३ ॥
धर्म हेत साका जिनि किया ॥
सीसु दिया पर सिररु न दिया ॥
नाटक चेटक किये कुकाजा ॥
प्रभ लोगन कह आवत लाजा ॥ १४ ॥

दोहरा ॥

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि, प्रभ पुर किया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिया, करी न किनहूं आन ॥ १५ ॥
तेग बहादर के चलत, भयो जगत को सोक ॥
है है है सब जग भयो, जै जै जै सुर लोक ॥ १६ ॥

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे पातसाही वरननं नाम पंचम अध्याय समाप्तमस्तु शुभमस्तु ॥ ५ ॥ अफजू ॥ २१५ ॥

चौपई ॥

अब मै अपनी कथा बखानो ॥
तप साधत जिह बिधि मुहि आनो ॥
हेम कुंट पर्बत है जहां ॥
सप्त श्रृङ्ग सोभित है तहां ॥ १ ॥
सप्त श्रृङ्ग तिह नाम कहावा ॥
पण्डु राज जह जोगु कमावा ॥
तहं हम अधिक तपस्या साधी ॥
महाकाल कालका अराधी ॥ २ ॥

इह बिधि करत तपस्या भयो ॥
द्वय ते एक रूप ह्वै गयो ॥
तात मात मुर अलख अराधा ॥
बहु बिधि जोग साधना साधा ॥ ३ ॥
तिन जो करी अलख की सेवा ॥
तांते भए प्रसन्न गुरुदेवा ॥
तिन प्रभ जब आयस मुहि दिया ॥
तब हम जन्म कलू महि लिया ॥ ४ ॥
चित न भयो हमरो आवन कह ॥
चुभी रही श्रुति प्रभु चरनन मह ॥
जिउं तिउं प्रभ हम को समझायो ॥
इम कहिकै इह लोक पठायो ॥ ५ ॥

अकाल पुरुख वाच इस कोट प्रति :—

जब पहले हम सृष्टि बनाई ॥
दैत्य रचे दुष्ट दुखदाई ॥
ते भुज बल बवरे ह्वै गए ॥
पूजत परम पुरख रहि गए ॥ ६ ॥
ते हम तमकि तनक मो खापे ॥
तिनकी ठउर देवता थापे ॥
ते भी बलि पूजा उरझाए ॥
आपन ही परमेसर कहाए ॥ ७ ॥
महादेव अच्युत कहायो ॥
बिसन आप ही को ठहिरायो ॥
ब्रह्मा आप पारब्रह्म बखाना ॥
प्रभ को प्रभू न किनहूं जाना ॥ ८ ॥

तब साखी प्रभ अष्ट बनाए ॥
साख निमित्त देबे ठहिराए ॥
ते कहै करो हमारी पूजा ॥
हम बिन अवरु न ठाकुरु दूजा ॥ ९ ॥

परम तत्त को जिन न पछाना ॥
तिन करि ईसर तिन कहु माना ॥
केते सूर चन्द कहु मानैं ॥
अगनि होत्र कई पवन प्रमानैं ॥ १० ॥

किनहूं प्रभु पाहन पहिचाना ॥
न्हात किते जल करत बिधाना ॥
केतक कर्म करत डरपाना ॥
धर्मराज को धर्म पछाना ॥ ११ ॥

जो प्रभ साख निमित्त ठहराए ॥
ते ईहां आइ प्रभु कहवाए ॥
तांकी बात बिसर जाती भी ॥
अपनी अपनी परत सोभ भी ॥ १२ ॥

जब प्रभ को न तिन्हैं पहिचाना ॥
तब हरि इन मनुच्छन ठहिराना ॥
ते भी बसि ममता हुइ गए ॥
परमेसर पाहन ठहिरए ॥ १३ ॥

तब हरि सिद्ध साध ठहिराए ॥
तिन भी परम पुरख नही पाए ॥
जे कोई होत भयो जगि स्याना ॥
तिन तिन अपनो पन्थु चलाना ॥ १४ ॥

परम पुरुख किनहूं नह पायो ॥
बैर बाद अहंकार बढायो ॥
पेड पात आपन ते जलै ॥
प्रभ कै पन्थ न कोऊ चलै ॥ १५ ॥

जिनि जिनि तनिक सिद्धि को पायो ॥
तिन तिन अपना राहु चलायो ॥
परमेसर न किनहूं पहिचाना ॥
मम उचारते भयो दिवाना ॥ १६ ॥

परम तत्त किनहूं न पछाना ॥
आप आप भीतरि उरझाना ॥
तब जे जे रिखराज बनाए ॥
तिन आपन पुन सिमृति चलाए ॥ १७ ॥

जे सिमृतन के भए अनुरागी ॥
तिन तिन क्रिया ब्रह्म की त्यागी ॥
जिन मन हरि चरनन ठहरायो ॥
सो सिमृतन के राह न आयो ॥ १८ ॥

ब्रह्मा चार ही बेद बनाए ॥
सरब लोक तिह कर्म चलाए ॥
जिन कीं लिव हरि चरनन लागी ॥
ते बेदन ते भए त्यागी ॥ १९ ॥

जिन मत बेद कतेबन त्यागी ॥
पारब्रह्म के भए अनुरागी ॥
तिन के गूढ मत्त जे चलही ॥
भांति अनेक दुक्खन सो दलही ॥ २० ॥

जे जे सहित जातन संदेहि ॥
प्रभ को संगि न छोडत नेह ॥
ते ते परम पुरी कह जाही ॥
तिन हरि सिऊ अन्तरु कछु नाही ॥ २१ ॥

जे जे जीय जातन ते डरैं ॥
परम पुरुख तजि तिन मग परैं ॥
ते ते नरक कुण्ड मो परही ॥
बारबार जग मो बपु धरही ॥ २२ ॥

तब हरि बहुर दत्त उपजायो ॥
तिन भी अपना पन्थु चलायो ॥
कर मो नख सिर जटा सवारी ॥
प्रभ की क्रिया न कछू बिचारी ॥ २३ ॥

पुनि हरि गोरख को उपराजा ॥
सिख । करे तिनहूं बडराजा ॥
स्रवन फारि मुद्रा द्वय डारी ॥
हरि की प्रीत रीति न बिचारी ॥ २४ ॥

पुनि हरि रामानन्द को करा ॥
भेष वैरागी को जिन धरा ॥
कंठी कंठि काठ की डारी ॥
प्रभ की क्रिया न कछू बिचारी ॥ २५ ॥

जे प्रभु परम पुरुख उपजाए ॥
तिन तिन अपने राह चलाए ॥
महादीन तब प्रभ उपराजा ॥
अरब देस को कीनो राजा ॥ २६ ॥

तिन भी एक पन्थ उपराजा ॥
लिंग बिना कीने सभ राजा ॥
सब ते अपना नाम जपायो ॥
सतिनामु कहूं न दृढ़ायो ॥ २७ ॥

सब अपनी अपनी उरझाना ॥
पारब्रह्म काहू न पछाना ॥
तप साधत हरि मोहि बुलायो ॥
इम कहिकै इह लोक पठायो ॥ २८ ॥

अकाल पुरख वाच ॥

चौपई ॥

मै अपना सुत तोहि निवाजा ॥
पन्थ प्रचुर करबे को साजा ॥
जाह तहा तै धर्म चलाइ ॥
कुबुधि करन ते लोक हटाइ ॥ २९ ॥

कवि वाच ॥ दोहरा ॥

ठाढ भयो मै जोरि कर, बचन कहा सिर निम्राइ ॥
पन्थ चलै नब जगत मै, जब तुम करहु सहाइ ॥ ३०

चौपई ॥

इह कारनि प्रभ मोहि पठायो ॥
तब मै जगत जन्म धरि आयो ॥
जिम तिन कही तिनै तिम कहिहों ॥
और किसू ते बैर न गहिहों ॥ ३१ ॥

जो हम को परमेसर उचरिहैं ॥
ते सब नरक कुंड महि परिहैं ॥
मो को दास तवन का जानो ॥
या मै भेद न रञ्च पछानो ॥ ३२ ॥
मैं हों परम पुरख को दासा ॥
देखन आयो जगत तमासा ॥
जो प्रभ जगति कहा सो कहिहों ॥
मृत्य लोक ते मोन न रहिहों ॥ ३३ ॥

नराज छन्द ॥

कह्यो प्रभू सु भाखिहों ॥ किसू न कान राखिहों ॥
किसू न भेख भीजहों ॥ अलेख बीज बीजहों ॥ ३४ ॥
पखाण पूजहों नही ॥ न भेख भीजहों कहीं ॥
अनन्त नामु गाइहों ॥ परम पुरख पाइहों ॥ ३५ ॥
जटा न सीस धारिहों ॥ न मुन्द्रका सुधारिहों ॥
न कान काहू की धरों ॥ कह्यो प्रभू सु मै करों ॥ ३६ ॥
भजो सु एक नामयं ॥ जु काम सर्ब ठामय ॥
न जाप आन को जपो ॥ न और थापना थपो ॥ ३७ ॥
बिआत नाम ध्याय हों ॥ परम जोति पाय हों ॥
न ध्यान आन को धरों ॥ न नाम आन उचरों ॥ ३८ ॥
तवक्क नाम रत्तियं ॥ न आन मान मत्तियं ॥
परम ध्यान धारिअं ॥ अनन्त पाप टारियं ॥ ३९ ॥
तुमेव रूप राचयं ॥ न आन दान माचयं ॥
तवक्क नाम उचारयं ॥ अनन्त दूख टारयं ॥ ४० ॥

चौपई ॥

जिन जिन नाम तिहारो ध्याया ॥
दूख पाप तिह निकट न आया ॥

जे जे और ध्यान को धरहीं ॥
बहिस बहिस बादन ते मरहीं ॥ ४१ ॥
हम एह काज जगत मो आए ॥
धर्म हेत गुरुदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धर्म बिथारो ॥
दुष्ट दोखीअनि पकरि पछारो ॥ ४२ ॥
याही काज धरा हम जनमं ॥
समझ लेहु साधू सब मनमं ॥
धर्म चलावन संत उबारन ॥
दुष्ट सभन को मूल उपारन ॥ ४३ ॥
जे जे भए पहिल अवतारा ॥
आप आप तिन जाप उचारा ॥
प्रभ–दोखी कोई न बिदारा ॥
धर्म करन को राहु न डारा ॥ ४४ ॥
जे जे गउस अंबीआ भए ॥
मैं मैं करत जगत ते गए ॥
महा पुरुख काहू न पछाना ॥
कर्म धर्म को कछू न जाना ॥ ४५ ॥
अवरन की आसा किछु नाही ॥
एकै आस धरो मन माही ॥
आन आस उपजत किछु नाही ॥
वाकी आस धरो मन माही ॥ ४६ ॥

दोहरा ॥

कोई पढ़त कुरान को, कोई पढ़त पुरान ॥
काल न सकत बचाइ कै, फोकट धर्म निदान ॥ ४७ ॥

चौपई ॥

कई कोटि मिलि पढ़त कुराना ॥
वाचत किते पुरान अजाना ॥
अन्त काल कोई काम न आवा ॥
दाव काल काहू न बचावा ॥ ४८ ॥

क्यों न जपो ताँको तुम भाई ॥
अन्त काल जो होइ सहाई ॥
फोकट धर्म लखो कर भरमा ॥
इन ते सरत न कोई करमा ॥ ४९ ॥

इह कारन प्रभ हमै बनायो ॥
भेदु भाखि इह लोक पठायो ॥
जो तिन कहा सु सभन उचरो ॥
डिम्भ विम्भ कछु नैक न करो ॥ ५० ॥

रसावल छन्द ॥

न जटा भूण्ड धारो ॥ न मुन्द्रका सवारौं ॥
जपो तास नामं ॥ सरै सर्ब कामं ॥ ५१ ॥
न नैनं मिचाऊं ॥ न डिम्भं दिखाऊं ॥
न कुकरर्मं कमाऊं ॥ न भेखी कहाऊं ॥ ५२ ॥

चौपई ॥

जे जे भेख सु तन मैं धारै ॥
ते प्रभु जन कछु कै न बिचारै ॥
समझ लेहु सब जन मन माहीं ॥
डिम्भन मैं परमेसुर नाहीं ॥ ५३ ॥

जे जे कर्म कर डिम्भ दिखाहीं ॥
तिन परलोगन मो गति नाहीं ॥
जीवत चलत जगत का काजा ॥
स्वांग देखि करि पूजत राजा ॥ ५४ ॥

सुआंगन मै परमेसुर नाही ॥
खोज फिरै सब ही को काही ॥
अपनो मनु कर मों जिह आना ॥
पारब्रह्म को तिन्ही पछाना ॥ ५५ ॥

दोहरा ॥

भेख दिखाइ जगत को, लोगन को बसि कीन ॥
अन्त काल काती कटिओ, बासु नरक मो लीन ॥५६॥

चौपई ॥

जे जे जग को डिम्भ दिखावै ॥
लोगन मूण्ड अधिक सुख पावै ॥
नासां मून्द करे प्रणामं ॥
फोकट धर्म न कौडी कामं ॥ ५७ ॥

फोकट धर्म जिते जग करहीं ॥
नरक कुंड भीतर ते परहीं ॥
हाथ हलाए सुरग न जाहू ॥
जो मनु जीत सका नहीं काहू ॥ ५८ ॥

कवि वाच ॥ दोहरा ॥

जो निज प्रभु मो सो कहा, सो कहिहों जग माहि ॥
जो तिह प्रभु को ध्याय है, अन्त स्वर्ग को जाहि ॥ ५९ ॥

दोहरा ॥

हरि हरिजन दुइ एक हैं, बिब बिचार कछु नाहिं ॥
जल ते उपज तरंग जिउ, जल ही बिखै समाहि ॥ ६० ॥

चौपई ॥

जे जे बादि करत हंकारा ॥
तिन ते भिन्न रहत करतारा ॥
बेद कतेब बिखै हरि नाहीं ॥
जान लेहु हरिजन मन माहीं ॥ ६१ ॥
आंख मूंदि कोऊ डिम्भ दिखाव ॥
आंधर की पदवी कहि पावै ॥
आंख मीच मग सूझ न जाई ॥
ताहि अनन्त मिलै किम भाई ॥ ६२ ॥
बहु बिस्थार कह लउ कोई कहै ॥
समझत बाति थकत हुऐ रहै ॥
रसना धरै कई जो कोटा ॥
तदपि गनत तिह परत सु तोटा ॥ ६३ ॥

दोहरा ॥

जब आइसु प्रभ को भयो, जन्मु धरा जग आइ ॥
अब मै कथा संछेप ते, सबहूं कहत सुनाइ ॥ ६४ ।

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे मम आज्ञा काल जग प्रबेश करन नाम षष्टमोध्याय समाप्तमस्तु शुभमस्तु ॥६॥ अफजू ॥ २७९ ॥

अथ कवि जन्म कथनं ॥

चौपई ॥

मुर पित पूरब कीयसि पयाना ॥
भान्ति भान्ति के तीरथि न्हाना ।
जब ही जात त्रिबेणी भए ॥
पुन्य दान दिन करत बितए ॥ १ ॥

तही प्रकास हमारा भयो ॥
पटना शहर विखै भव लयो ॥
मद्र देस हम को ले आये ॥
भान्ति भान्ति दाईअनि दुलराये ॥ २ ॥

कीनी अनिक भान्ति तन रच्छा ॥
दीनी भान्ति भान्ति की सिच्छा ॥
जब हम कर्म धर्म मो आये ॥
देव लोक तब पिता सिधाये ॥ ३ ॥

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे कविजन्म कथनं नाम सप्तमोध्याय समाप्तमस्तु शुभमस्तु ॥ ७ ॥ अफजू । २८२ ॥

अथ राज साज कथनं ॥

चौपई ॥

राज साज हम पर जब आयो ॥
यथा शक्ति तब धर्म चलायो ॥
भान्ति भान्ति बन खेल शिकारा ॥
मारे रीछ रोझ झंखारा ॥ १ ॥

देस चाल हम ते पुनि भई ॥
शहर पांवटा की सुधि लई ॥
कालिन्द्री तटि करे बिलासा ॥
अनिक भान्ति के पेख तमासा ॥ २ ॥

तांह के सिंह घने चुनि मारे ॥
रोभ रीछ बहु भान्ति बिदारे ॥
फतह शाह कोपा तब राजा ॥
लोह परा हम सों बिनु काजा ॥ ३ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

तहां शाह श्री शाह संग्राम कोपे ॥
पंचो बीर बंके पृथी पाइ रोपे ॥
हठी जीत मल्लं सु गाजी गुलाबं ॥
रणं देखीऐ रंग रूपं सहाबं ॥ ४ ॥

हठयो माहरी चंदयं गंगरामं ॥
जिनै कित्तियं जित्तियं फौज तामं ॥
कुपे लालचंदं किये लाल रूपं ॥
जिनै गज्जीग्रं गर्व सिंहं अनूपं ॥ ५ ॥

कुपियो माहरू काहरू रूप धारे ॥
जिनै खान खावीनीयं खेत मारे ॥
कुपयो देवतेशं दयाराम जुद्ध ॥
कियो द्रोणकी निउं महा जुद्ध सुद्धं ॥ ६ ॥

कृपाल कोप्यं कुतको सम्भारी ॥
हठी खान हय्यात के सीस भारी ॥
उठी छिच्छि इच्छं कढा मेभ जोरं ॥
मनो माखनं मट्टकी कान्ह फोरं ॥ ७ ॥

तहा नन्दचन्दं कियो कोपु भारो ॥
लगाई बरच्छी कृपाणं सम्भारो ॥
तुटी तेग त्रिक्खी कढे जमदढं ॥
हठी राखयं लज्ज बंसं सनढं ॥ ८ ॥
तहां मातलेयं कृपालं करुद्धं ॥
छकयो छोभ छत्री करयो जुद्ध सुद्धं ॥
सहे देह आपं महाबीर बानं ॥
करो खान बानीच खाली पलाणं ॥ ९ ॥
हठ्यो साहवंचन्द खेतं खत्रियाणं ॥
हठे खान खूनी खुरासान भानं ॥
तहाँ बीर बंके भली भान्ति मारे ॥
बचे प्राण लैके सिपाही सिधारे ॥ १० ॥
तहां साह संग्राम कीने अखारे ॥
घने खेत मों खान खूनी लतारे ॥
नृपं गोपलायं खरो खेत गाजै ॥
मृगा झुण्ड मध्यं मनो सिंह राजे ॥ ११ ॥
तहां एक बीरं हरीचन्द कोप्यो ॥
भली भान्ति सो खेत मों पांव रोप्यो ॥
महा क्रोध कै तीर तीखे प्रहारे ॥
लगै जौन कै ताहि पारै पधारै ॥ १२ ॥

रसावल छन्द ॥

हरीचन्द क्रुद्धं ॥ हते सूर सुद्धं ॥
भले बाण बाहे ॥ बडे सैन गाहे ॥ १३ ॥
रसं रुद्र राचे ॥ महा लोह माचे ॥
हने शस्त्रधारी ॥ लिटे भूप भारी ॥ १४ ॥

तबै जीत मल्लं ।। हरीचन्द भल्लं ।।
हृदय ऐंच मारयो ।। सु खेतं उतारयो ।। १५ ।।
लगे बीर बाणं ।। रिसियो तेजि माणं ।।
समुह बाज डारे ।। स्वरगं सिधारे ।। १६ ।।

भुजंग प्रयात छन्द ।।

खुले खान खूनी खुरासान खग्गं ।।
परी शस्त्र धारं उठी झाल अग्गं ।।
भई तीर भीरं कमाणं कड़क्के ।।
गिरे बाज ताजी लगे धीर धक्के ।। १७ ।।
बजी भेरि भुंकार धुक्के नगारे ।।
दुहूं ओर ते बीर बंके बकारे ।।
करे बाहु आघात शस्त्रं प्रहारं ।।
डकी डाकणी चावडी चीतकारं ।। १८ ।।

दोहरा ।।

कहां लगे वर्णन करौं, मचयो जुद्धु अपार ।।
जे लुज्झे जुज्झे सबै, भज्जे सूर हजार ।। १९ ।।

भुजंग प्रयात छन्द ।।

भजयो साह पाहाड़ ताजी तृपायं ।।
चलयो बीरीया तीरीया न चलायं ।।
जसो डड़वालं मधुकरां सु साहं ।
भजे संग लैके सु सारी सिपाहं ।। २० ।।
चक्रित चोपयो चन्द गाजी चन्देलं ।।
हठी हरीचंदं गहे हाथ सेलं ।।

करयो स्वामि धर्मं महारोष रुज्झियं ॥
गिरयो टूक टूक ह्वै इसो सूर जुज्झियं ॥
तहा खाण नैजाबतो आन कै कै ॥
हनयो साह संग्राम कौ सस्त्र लै कै ॥
कितै खान बानीन हूं अस्त्र झारे ॥
सही सबह संग्राम सुरगं सिधारे ॥ २२ ॥

दोहरा ॥

मारि नजाबत खान को, संगो जुझै जुझार ॥
हाहा इह लोकै भयो, सुर्ग लोक जयकार ॥ २३ ॥

भुजंग छन्द ॥

लखे साह संग्राम जुज्झे जुझारं ॥
तव कीट बाणं कमाणं सम्भारं ॥
हनयो एक खानं ख्यालं खतँगं ॥
डसयो शत्रु को जान श्यामं भुजंगं ॥ २४ ॥
गिरयो भूमि सो वाण दूजो संभारयो ॥
मुखं भीखनं खान के तान मारयो ॥
भजयो खान खूनी रह्यो खेत ताजी ॥
तजे प्राण तीजे लगे बाण बाजी ॥ २५ ॥
छुटी मूर्छणा हरीचन्दं सम्भारे ॥
गहे बाण कामाण भे ऐंच मारे ॥
लगे अंग जांके रहे न सम्भारं ॥
तनं त्याग ते देव लोकं पधारं ॥ २६ ॥

द्वयं बान खैंचे इकं बार मारे ॥
बली बीर बाजीन ताजी बिदारे ॥
जिसै बान लागै रहै न सम्भारं ॥
तनं बेधि कै ताहि पारं सिधारं ॥ २७ ॥

सबै स्वामि धर्मं सु बीरं सम्भारे ॥
डकी डाकणी भूत प्रेतं बकारे ॥
हसे बीर बैताल औ सुद्ध सिद्धं ॥
चवी चावडीयं उडी गृद्ध बृद्धं ॥ २८ ॥

हरीचन्द कोपे कमाण सम्भारं ॥
प्रथम बाजीयं ताणं बाण प्रहारं ॥
दुतीय ताक कै तीर मोको चलायं ॥
रख्यो दैव मैं कान छ्वैके सिधायं ॥ २९ ॥

तृतीय बाण मारयो सु पेटी मझारं ॥
बिधिअं चिलकतं दुआलपारं पधारं ॥
चुभी चिच चर्मं कछू घाइ न आयं ॥
कलं केवलं जान दासं बचायं ॥ ३० ॥

रसावल छन्द ॥

जबै बान लागयो ॥ तबै रोस जागयो ॥
करं लै कमाणं ॥ हनं बाण ताणं ॥ ३१ ॥

सबै बीर धाए ॥ सरोघं चलाए ॥
तबै ताकि बाणं ॥ हनयो एक जुआनं ॥ ३२ ॥

हरी चंद मारे ॥ सुजोधा लतारे ॥
सु कारोड़ रायं ॥ वहै काल घायं ॥ ३३ ॥

रणं त्याग भागे ॥ सबै त्रास पागे ॥
भई जीत मेरी ॥ कृपा काल केरी ॥ ३४ ॥
रणं जीति आए ॥ जयं गीत गाए ॥
धनं धार बरखे ॥ सबै सूर हरखे ॥ ३५ ॥

दोहरा ॥

जुद्ध जीत आए जबै, टिकै न तिन पुर पांव ॥
काहलूर में बांधिओ, आन आनन्द पुर गांव ॥ ३६ ॥
जे जे नर तहि न भिरे, दीने नगर निकार ॥
जे तिह ठौर भले भिरे, तिनै करी प्रतिपार ॥ ३७ ॥

चौपई ॥

बहुत दिवस इह भान्ति बिताए ॥
संत उबार दुष्ट सब घाए ॥
टांग टांग करि हने निदाना ॥
कूकर जिमि तिन तजे पराना ॥ ३८ ॥

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे भंगाणी जुद्ध वर्णनं नाम अष्टमोध्याय समाप्तमस्तु शुभमस्तु ॥ ८ ॥ अफजू ॥ ३२० ॥

अथ नादौन का जुद्ध वर्णनं ॥

चौपई ॥

बहुत काल इह भान्ति बितायो ॥
मीयां खान जम्मू कह आयो ॥
अलफ खान नादौन पठावा ॥
भीमचन्द तन बैर बढ़ावा ॥ १ ॥

युद्ध काज नृप हमै बुलायो ॥
आपि तवन की ओर सिधायो ॥
तिन कठ गढ़ नवरस पर बांधो ॥
तीर तुफ़ंग नरेसन सांधो ॥ २ ॥

भुजंग छन्द ॥

तहां राज सिहं बली भीम चंदं ॥
चढ़िओ रामसिहं महा तेज वंदं ॥
सुखंदेव गाजी जसारोट राजं ॥
चढ़े क्रुद्ध कीने करे सर्ब काजं ॥ ३ ॥

पृथीचन्द चढ़िओ चढ़े डढवारं ॥
चले सिद्ध हुऐ काज राजं सुधारं ॥
करी ढुक ढोअं किरेपाल चन्दं ॥
हटाए सबै मारि कै बीर बृन्दं ॥ ४ ॥

द्वतीय ढोअ ढूकै वहै मारि उतारी ॥
खरे दांत पीसै छुभै छत्रधारी ॥
उतै वै खरे बीर बम्बै बजावैं ॥
तरे भूप ठांढे बडो सोकु पावैं ॥ ५ ॥

तबै भीम चंदं कीयो कोपु आपं ॥
हनूमान के मन्त्र को मुख जापं ॥
सबै बीर बोलै हमैं भी बुलायं ॥
तबै ढोअ कै कै सु नीके सिधायं ॥ ६ ॥

सबै कोप कै कै महाबीर ढूके ॥
चले बारवे बार को ज्यों भभूके ॥

तहां बिभुड़िआलं हठयो बीर दयालं ॥
उठिओ सैन लै संगि सारे कृपालं ॥ ७ ॥

मधुभार छन्द ॥

कुपयो कृपाल ॥ नच्चे मराल ॥
बज्जे बजन्त ॥ क्रूरं अनन्त ॥ ८ ॥
जुज्झंत जुआण ॥ बाहै कृपाण ॥
जीय धार क्रोध ॥ छड्डे सरोघ ॥ ९ ॥
लुज्झे निदान ॥ तज्जंत प्राण ॥
गिर परत भूमि ॥ जणु मेघ झूम ॥ १० ॥

रसावल छन्द ॥

किरपाल कोपियं ॥ हठी पांव रोपियं ॥
सरोघं चलाये ॥ बडे बीर घाये ॥ ११ ॥
हणे छत्रधारी ॥ लिटे भूप भारी ॥
महा नाद वाजे ॥ भले सूर गाजे ॥ १२ ॥
कृपालं करुद्धं ॥ कियो जुद्ध सुद्धं ॥
महाबीर गज्जे ॥ महा हार बज्जे ॥ १३ ॥
करो जुद्ध चंडं ॥ सुणयो नव खंडं ॥
चलयो सस्त्र बाही ॥ रजौती निबाहा ॥ १४ ॥

दोहरा ॥

कोप भरे राजा सबै, कीनो जुद्ध उपाय ॥
सैन कटोचन की तबै, घेर लई अरिराय ॥ १५ ॥

भुजंग छन्द ॥

चले नांगलू पांगलू वेदडौलं ॥
जसवारे गुलेरे चले बांध टोलं ॥
तहां एक बाजिओ महाबीर दयालं ॥
रखी लाज जौनै सबै बिभड़वालं ॥ १६ ॥

तवं कीट तौ लौ तुफंग संभारो ॥
हृदय एक रावंत के तक्कि मारो ॥
गिरिओ झूम भूमै करयो जुद्ध सुद्धं ॥
तऊ मारि बोलयो महा मानि क्रुद्धं ॥ १७ ॥

तजयो तुपकं बान पानं सम्भारे ॥
चतुर बानयं लै सु सवियं प्रहारे ॥
त्रियो बान लै बाम पानं चलाये ॥
लगे या लगे न कछू जानि पाये ॥ १८ ॥

सु तौ लौ दईव जुद्ध कीनो उभारं ॥
तिनं खेद कै बारि के बीच डारं ॥
परी मार बुगं छुटी बाण गोली ॥
मनो सूर बैंठे भली खेल होली ॥ १९ ॥

गिरे बीर भूमं सरं सांग पेलं ॥
रंगे स्रोण बस्त्रं मनो फाग खेलं ॥
लियो जीत बैरी किया आन डेरं ॥
तेऊ जाय पारं रहे बारि केरं ॥ २० ॥

भई राति गुबारके अरध जामं ॥
तबै छोरिगे बार देवै दमामं ॥

सबै रात्रि बीती उदयो दिस्रोसराणं ॥
चले बीर चालाक खग्गं खिलाणं ॥ २१ ॥
भजयो अलफ खानं न खाना संभारयो॥
भजे और बारं न धीरं बिचारयो ॥
नदी पै दिनं अष्ट कीने मुकामं ॥
भली भान्ति देखे सबै राजधामं ॥ २२ ॥

चौपई ॥

इत हम होइ बिदा घर आए॥
सुलह निमित्त वै उतहि सिधाए॥
सन्धि इनै उन कै संगि कई ॥
हेत कथा पूरण इत भई ॥ २३ ॥

दोहरा ॥

आलसून कहि मारिकै, इह दिसि कियो पयान ॥
भान्ति अनेकन के करे, पुर अनन्द सुख आन ॥ २४ ॥

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे नदौन जुद्ध वर्णनं नाम नवमो अध्याय समाप्तमस्तु शुभमस्तु ॥ ९ ॥ अफजू ॥ ३४४ ॥

चौपई ॥

बहुत वर्ष इह भान्ति बिताए ॥
चुनि चुनि चोर सबै गहि घाए ॥
केतक भाजि सहिर ते गए ॥
भूख मरत फिर आवत भए ॥ १ ॥

तब लौ खान दिलावर आए ॥
पूत आपन हम ओर पठाए ॥
द्वयकु घरी बीती निसि जबै ॥
चढ़त करी खानन मिलि तबै ॥ २ ॥

जब दल पार नदी के आयो ॥
आन आलमै हमैं जगायो ॥
सोरु परा सब ही नर जागे ॥
गहि गहि सस्त्र बीर रिस पागे ॥ ३ ॥

छूटन लगी तुफ़ंगैं तबही ॥
गहि गहि सस्त्र रिसाने सबही ॥
क्रूर भान्ति तिन करी पुकारा ॥
शोरु सुना सरिता के पारा ॥ ४ ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

बजी भेर भुंकार धुंके नगारे ॥
महाबीर बानैत बंके बकारे ॥
भए बाहु आघात नच्चे मरालं ॥
कृपासिंधु काली गरज्जी करालं ॥ ५ ॥

नदीयं लखयो काल रात्रं समानं ॥
करे सूरमा सीत पिंगं प्रमानं ॥
इते बीर गज्जे भए नाद भारे ॥
भजे खान खूनी बिना शस्त्र झारे ॥ ६ ॥

नराज छन्द ॥

निलज्ज खान भज्जिओ ॥ किनी न शस्त्र सज्जिओ ॥
सु त्याग खेत को चले ॥ सु बीर बीरहा भले ॥ ७ ॥

चले तुरे तुराइकै ।। सके न शस्त्र उठाइकै ।।
न लै हथिआर गज्जही ।। निहार नारि लज्जही ।। ८ ।।

दोहरा ।।

बरवा गाउं उजार कै करे मुकाम भलान ।।
प्रभ बल हमै न छुइ सकै भाजत भए निदान ।। ९ ।।
तव बल ईहाँ न पर सकै बरवा हना रिसाइ ।।
सालन रस जिम बानीयो रोरन खात बनाइ ।। १० ।।

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे खानजादे को आगमन
त्रासित उठ जैबो वर्णनं नाम दशमोध्याय
समाप्तमस्तु शुभमस्तु ।। १० ।। अफजू ।। ३५४ ।।

हुसैनी जुद्ध कथनं ।।

भुजंग प्रयात छन्द ।।

गयो खानजादा पिता पास भज्जं ।।
सकै ज्वाब दै ना हने सूर लज्जं ।।
तहां ठोक बाहां हुसैनी गरज्जियं ।।
सबै सूर लैके सिला साज सज्जियं ।। १ ।।
करियो जोर सैनं हुसैनी पयानं ।।
प्रथम कूटिकै लूट लीने अवानं ।।
पुनर डढ्ढवालं कियो जीति जेरं ।।
करे बंदि कै राज पुत्रान चेरं ।। २ ।।
पुनर दून को लूट लीनो सुधारं ।।
कोई सामुहे ह्वय सकयो न गवारं ।।

लियो छीन अन्नं दलं बांटि दीयं ॥
महा मूड़ियं कुत्सितं काज कीयं ॥ ३ ॥

दोहरा ॥

कितक दिवस बीतत भए करत उसै उतपात ॥
गुआलेरीअन की परत भी आन मिलन की बात ॥ ४ ॥
जौ दिन दूइक न वे मिलत तब आवत अरराइ ॥
कालि तिनू के घर बिखैं डारी कलह बनाइ ॥ ५ ॥

चौपई ॥

गुआलेरीआ मिलन कहु आए ॥
राम सिंह भी संग सिधाए ॥
चतरथ आन मिलत भए जामं ॥
फूटि गई लखि नजरि गुलामं ॥ ६ ॥

दोहरा ॥

जैसे रवि के तेज ते रेत अधिक तपताय ॥
रवि बलि छुद्र न जानई आपन ही गरबाय ॥ ७ ॥

चौपई ॥

तैसे ही फूल गुलाम जाति भयो ॥
तिनै न दृष्टि तरे आनत भयो ॥
काहलूरिया कटोच संग लहि ॥
जाना आन न मो सर महि महिं ॥ ८ ॥
तिन जो धन आनो सो साथा ॥
ते दे रहे हुसैनी हाथा ॥

देत लेत आपन कुरराने ॥
ते धन लै निजि धाम सिधाने ॥ ९ ॥

चेरो तबै तेज तन तयो ॥
भला बुरा कछु लखत न भयो ॥
छन्द बोट नह नैकु बिचारा ॥
जात भयो दे तबहि नगारा ॥ १० ॥

दाव घाव तिन नैकु न करा ॥
सिंहहि घेरि ससा कहु डरा ॥
पन्द्रह पहिर गिर्द तिन कियो ॥
खान पान तिन जान न दियो ॥ ११ ॥

खान पान बिन सूरि रिसाये ॥
साम करन हित दूत पठाये ॥
दास निरख संगि सैन पठानी ॥
फूलि गयो तिन की नहीं मानीं ॥ १२ ॥

दस सहस्र अब ही कै देहू ॥
ना तर मीच मूण्ड पर लैहू ॥
सिंह संगतीआ तहाँ पठाए ॥
गोपालै सु धर्म दे लिआए ॥ १३ ॥

तिन कै संगि न उनकी बनी ॥
तब कृपाल चित मो इह गनी ॥
ऐसि घाति फिर हाथ न ऐहै ॥
सबहूं फेर समो छलि जैहैं ॥ १४ ॥

गोपालै सु अबै गहि लीजै ॥
कैद कीजिऐ कै बध कीजै ॥
तनिक भिनक जब तिन सुन पाई ॥
निज दल जात भयो भटराई ॥ १५ ॥

मधुभार छन्द ॥

जब गयो गुपाल ॥ कुपयो कृपाल ॥
हिम्मत हुसैन ॥ जुम्मै लुझैन ॥ १६ ॥

करिकै गुमान ॥ जुम्मै जुआन ॥
बज्जे तबल्ल ॥ दुन्दभ दबल्ल ॥ १७ ॥

बज्जे निसाण ॥ नच्चै किकाण ॥
बाहै तड़ाक ॥ उट्ठै कड़ाक ॥ १८ ॥

बज्जे निसङ्ग ॥ गज्जे निहङ्ग ॥
छुट्टै कृपान ॥ लिट्टै जुआन ॥ १९ ॥

तुप्पक तड़ाक ॥ कैबर कड़ाक ॥
सैहथी सड़ाक ॥ छौही छड़ाक ॥ २० ॥

गज्जे सु बीर ॥ बज्जे गहीर ॥
बिचरे निहङ्ग ॥ जैसे पलङ्ग ॥ २१ ॥

हुक्के किकाण ॥ धुक्के निसाण ॥
बाहै तड़ाक ॥ झल्लै झड़ाक ॥ २२ ॥

जुज्झे निहंग ॥ लिट्टे मलंग ॥
खुल्हे किसार ॥ जनु जटाधार ॥ २३ ॥

सज्जे गजिन्द्र ॥ गज्जे गजिन्द्र ॥
उत्तरे खान ॥ लै लै कमान ॥ २४ ॥

त्रिभंगी छन्द ॥

कुपयो कृपालं सज्जि मरालं बाहु बिसालं धरि ढालं ॥
धाए सब सूरं रूप करूरं चमकत नूरं मुख लालं ॥
लै लै सु कृपानं बाण कमाणं सजे जुआनं तन तत्तं ॥
रणि रंग कलोलं मारही बोलं जन गज डोलं बन मत्तं ॥२५॥

भुजंग छन्द ॥

तबै कोपियँ कांगड़ेसं कटोचं ॥
मुखं रक्त नैनं तजे सरब सोचं ॥
उते उठीयं खान खेतं खतंगं ॥
मनो बिहचरैं मास हेतं पलंगं ॥ २६ ॥

बजी भेर भुंकार तीरं तड़क्के ॥
मिले हत्थि बत्थं कृपाणं कड़क्के ॥
बजे जङ्ग नीसाण कत्थे कथीरं ॥
फिरै रुण्ड मुण्डं तनं तच्छ तीरं ॥ २७ ॥

उठै टोप टूकं गुरजै प्रहारे ॥
रुले लुत्थ जुत्थं गिरे बीर मारे ॥
परै कत्तीयं घात निर्घात बीरं ॥
फिरै रुण्ड मुण्डं तनं तच्छ तीरं ॥ २८ ॥

बही बाहु आघात निर्घात बाणं ॥
उठे नद्द नादं कड़क्के कृपाणं ॥
छके छोभ छत्री तजे बाण राजी ॥
बहे जाहि खाली फिरै छूछ ताजी ॥ २९ ॥

जुटे आप में बीर बीरं जुझारे ॥
मनो गज्ज जुट्टे दंतारे दंतारे ॥
किधौ सिंह सो सारदूलं अरुज्झे ॥
तिसी भान्ति किरपाल गोपाल जुज्झे । ३०॥

हरीसिंह धायो तहां एक बीरं ॥
सहे देह आपं भली भान्ति तीरं ॥
महा कोपके बीर बृन्दं संहारे ॥
बडो जुद्ध कै देव लोकं पधारे ।। ३१ ॥

हठियो हिम्मतं किमतं लै कृपानं ॥
लए गुरज चल्लं सु जलाल खानं ॥
हठे सूरमा मत्त जोधा जुझारं ॥
परी कुट कुट्टं उठी सस्त्र झारं ॥ ३२ ॥

रसावल छन्द ॥

जसंवाल धाए ॥ तुरंगं नचाए ॥
लयो घेर हुसैनी ॥ हनयो सांग पैंनी ॥ ३३ ॥
तिनू बाण बाहे ॥ बडे सैन गाहे ॥
जिसै अंगि लागयो ॥ तिसै प्राण त्यागयो ॥ ३४ ॥
जबै घाव लागयो ॥ तबै कोप जागयो ॥
सम्भारी कमाणं ॥ हणे बीर बाणं ॥ ३५ ॥
चहूं ओर ढूके ॥ मुखं मार कूके ॥
निभंय सस्त्र बाहैं ।, दोऊ जीत चाहैं ॥ ३६ ॥
रिसे खानजादे ॥ महा मद्द मादे ॥
महा बाण बरखे ॥ सबै सूर हरखे ॥ ३७ ॥

करैं बाण अर्चा ॥ धनुर वेद चर्चा ॥
सु साँग सम्हालं ॥ करै तौन ठामं ॥ ३८ ॥

बली बीर रुज्झे ॥ समूह सस्त्र जुज्झे ॥
लगै धीर धक्कै ॥ कृपाण झनक्कै ॥ ३९ ॥

कड़क्कै कमाणं ॥ झणकै कृपाणं ॥
कड़ंकार छुट्टै ॥ झणंकार उट्ठै ॥ ४० ॥

हठी सस्त्र झारै ॥ न संका बिचारै ॥
करै तीर मारं ॥ फिरै लोह घारं ॥ ४१ ॥

नदी स्रोण पूरं ॥ फिरै गैण हूरं ॥
उभे खेतपालं ॥ बके बिकरालं ॥ ४२ ॥

पाधड़ी छन्द ॥

तह हड़ हड़ाइ हस्से मसाण ॥
लिट्टे गज़िन्द्र छुट्टे किकाण ॥
जुट्टे सु बीर तह कड़क जंग ॥
छुट्टी कृपाण वुट्ठे खतंग ॥ ४३ ॥
डाकन डहिक चावड चिकार ॥
काकं कहक्कि बज्जे दुधार ॥
खोलं खड़क्कि तुप्पकि तड़ाकि ॥
सैथं सड़क्क धक्कं धहाकि ॥ ४४ ॥

भुजंग छन्द ॥

तहा आप कीनो हुसैनी उतारं ॥
सभ हाथ बाणं कमाणं संभारं ॥

रुपे खान खूनी करै लाग जुद्धं ।।
मुखं रकत नैणं भरे सूर क्रुद्धं ।। ४५ ।।

जगियो जंग जालम सु जोधं जुझारं ।।
वहे बाण बांके बरछी दुधारं ।।
मिले बीर बीरं महा धीर बंके ।।
धका धक्कि सैथ कृपाणं झनके ।। ४६ ।।

भए ढोल ढंकार नादं नफीरं ।।
उठै बाहु आघात गज्जै सुबीरं ।।
नव नद्द नीसान बज्जे अपारं ।।
रुले तच्छ मुच्छं उठी सस्त्र झारं ।। ४७ ।।

टका टुक्क टोपं ढका ढुक्क ढालं ।।
महा बीर बानैत बंकै बिकालं ।।
नचे बीर बैतालयं भूत प्रेतं ।।
नची डाकिणी जोगणी उरध हेतं ।। ४८ ।।

छुटी जोग तारी महा रुद्र जागे ।।
डिगयो ध्यान ब्रह्मं सभै सिद्ध भागे ।।
हसे किन्नरं जच्छ विद्या धरेयं ।।
नची अच्छरा पच्छरा चारणेयं ।। ४९ ।।

परिओ घोर जुद्धं सु सैना परानी ।।
तहां खां हुसैनी मण्डिओ बीर बानी ।।
उतै बीर धाए सु बीरं जस्वारं ।।
सवै व्योत डारे बगासे असवारं ।। ५० ।।

तहां खां हुसैनी रहिओ एक ठाडं ।।
मनो जुद्ध खंभं रणं भूम गाडं ।।

जिसै कोप कै कै हठी बाणि मारिओ ॥
तिसै छेद कै पैल पारे पधारिओ ॥ ५१ ॥

सहे बाण सूरं सबै आण ढूकै ॥
चहूं ओर ते मार ही मार कूकै ॥

भली भान्ति सो अस्त्र औ शस्त्र झारे॥
गिरे भिसत को खां हुसैनी सिधारे ॥ ५२ ॥

दोहरा ॥

जबै हुसैनी जूझिओ भयो सूर मन रोसु ॥
भाजि चले अवरे सबै उठिओ कटोचन जोसु ॥ ५३ ॥

चौपई ॥

कोपि कटोचि सबै मिलि धाए ॥
हिम्मति किम्मति सहित रिसाए ॥

हरी सिंह तब किया उठाना ॥
चुनि चुनि हने पखरीआ जुआना ॥ ५४ ॥

नराज छन्द ॥

तबै कटोच कोपीअं ॥ संभार पाव रोपीअं ॥
सरक्क सस्त्र झारही ॥ सु मारि मारि उचारही ॥५५॥

चंदेल चोपीयं तबै । रिसात धात भे सबै ॥
जिते गए सु मारीयं ॥ बचै तिते सिधारीयं ॥ ५६ ॥

दोहरा ॥

सात सवारन के सहित जूझे सङ्गत राइ ॥
दरसो सुनि जूझै तिनै बहुत जुझत भयो आइ ॥ ५७ ॥

हिम्मत हूं उतरयो तहां बीर खेत मंझार ॥
केतन के तनि घाय सहि केतन कै तनि झार ॥ ५८ ॥
बाज तहां जूझत भयो हिम्मत गयो पराइ ॥
लोथ कृपालहि की निमित कोपि परे अर राइ ॥ ५९ ॥

रसावल छन्द ॥

बली बैर रुज्झै ॥ समूह सार जुज्झै ॥
कृपा रामि गाजी ॥ लरिओ सैन भाजी ॥ ६० ॥
महा सैन गाहैं ॥ निर्भय शस्त्र बाहै ॥
घनियो काल कै कै । चलै जस्स लै कै ॥ ६१ ॥
बजे संख नादं ॥ सुरं निरबिखादं ॥
बजे डौर डढ्ढं ॥ हठे शस्त्र कढ्ढं ॥ ६२ ॥
परी भीर भारी ॥ जूझै छत्र धारी ॥
मुखं मुच्छ बंकं ॥ मण्डे बीर हंकं ॥ ६३ ॥
मुखं मारि बोलै ॥ रणं भूमि डोलै ॥
हथ्यारं सम्भारै ॥ उभय बाज डारै ॥ ६४ ॥

दोहरा ॥

रण जुज्झत किरपाल के नाचत भयो गुपाल ॥
सैन सबै सिरदार दै भाजत भई बिहाल ॥ ६५ ॥
खान हुसैन कृपाल के हिम्मत रण जूझंत ॥
भागि चले जोधा सबै जिम दे मुकट महंत ॥ ६६ ॥

चौपई ॥

इह बिधि सत्रु सबे चुनि मारे ॥
गिरे आपने सूर संभारे ॥

तह घायल हिम्मत कह लहा ॥
राम सिंह गोपाल सिउं कहा ॥ ६७ ॥

जिन हिम्मत अस कलह बढायो ॥
घायल आज हाथ वह आयो ॥
जब गुपाल ऐसे सुनि पावा ॥
मार दियो जीअत न उठावा ॥ ६८ ॥

जीत भई रन भयो उझारा ॥
सिमृति करि सब घरों सिधारा ॥
राखि लियो हम को जगराई ॥
लोह घटा अनते बरसाई ॥ ६९ ॥

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे हुसैनी बध कृपाल हिम्मत सङ्गतीआ बध वर्णनं नाम एकादशमोध्याय समाप्तमस्तु शुभमस्तु ॥ ११ ॥ अफजू ॥ ४२३ ॥

चौपई ॥

जुद्ध भयो इह भान्ति अपारा ॥
तुरकन को मारिओ सिरदारा ॥
रिस तन खान दिलावर तए ॥
इतै सऊर पठावत भए ॥ १ ॥

उते पठयो उन सिंह जुझारा ॥
तिह भलान ते खेद निकारा ॥
इति गज सिंह पम्मा दल जोरा ॥
धाय परे तिन ऊपर भोरा ॥ २ ॥

उतै जुझार सिंह भयो आडा ॥
जिम रण खम्भ भूमि रणि गाडा ॥

गाडा चले न हाडा चलि है ॥
सामुहि सेल समर मो झलि है ॥ ३ ॥
बाट चढ़ै दल दोऊ जुझारा ॥
उतै चंदेल इतै जसवारा ॥
मण्डयो बीच खेत मो जुद्धा ॥
उपजयो समर सूर मन क्रुद्धा ॥ ४ ॥
कोप भरे दोऊ दिस भट भारे ॥
इतै चन्देल उतै जसवारे ॥
ढोल नगारे बजे अपारा ॥
भीम रूप भैरो भभकारा ॥ ५ ॥

रसावल छन्द ॥

धुणं ढोल बज्जे ॥ महा सूर गज्जे ॥
करे सस्त्र घावं ॥ चढ़े चित्त चावं ॥ ६ ॥
निर्भय बाज डारै ॥ परग्घै प्रहारै ॥
करे तेग घायं ॥ चढ़े चित्त चायं ॥ ७ ॥
बकै मार मारं ॥ न संका बिचारं ॥
रुलै तच्छ मुच्छं ॥ करै सुर्ग इच्छं ॥ ८ ॥

दोहरा ॥

नैक न रण ते मुरि चलै करै निडर ह्वै घाइ ॥
गिर गिर परै पवगं ते बरे बरगंन जाइ ॥ ९ ॥

चौपई ॥

इह बिध होत भयो संग्रामा ॥
जुझे चन्द नाराइन नामा ॥

तब जुझार एकल ही धयो ॥
बीरन घेरि दसो दिस लयो ॥ १० ॥

दोहरा ॥

धसयो कटक मे झटक दै कछू न संक बिचार ॥
गाहत भयो सुभटन बडे बाहत भयो हथिआर ॥ ११ ॥

चौपई ॥

इह बिधि घणे धरन को गारा ॥
भान्ति भान्ति के करि हथियारा ॥
चुनि चुनि बीर पखरीआ मारे ॥
अन्ति देवपुरि आप पधारे ॥ १२ ॥

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे जुझार सिंह जुद्ध वर्णनं नाम द्वादशमोध्याय समाप्तमस्तु शुभमस्तु ॥ १२ ॥ अफजू ॥ ४३५ ॥

शाहज़ादे को आगमन मद्र देश ॥

चौपई ॥

इह बिधि सो बध भयो जुझारा ॥
आन बसे तब धाम लुझारा ॥
तब अउरंग मन मांहि रिसावा ॥
मद्र देश को पूत पठावा ॥ १ ॥

तिह आवत सब लोक डराने ॥
वडे वडे गिर हेर लुकाने ॥
हम हूं लोगन अधिक डरायो ॥
काल करम को मरम न पायो ॥ २ ॥

कितक लोक तजि संगि सिधारे ॥
जाय बसे गिरवर जहि भारे ॥
चित मूजियन को अधिक डराना ॥
तिनै उबार न अपना जाना ॥ ३ ॥

तब औरंग जिय मांझ रिसाए ॥
एक अहदीआ ईहां पठाए ॥
हम ते भाजि बिमुख जे गए ॥
तिनके धाम गिरावत भए ॥ ४ ॥

जे अपने गुरु ते मुख फिरिहैं ॥
ईहां ऊहां तिन के गृह गिरि हैं ॥
इहां उपहास न सुर पुर बासा ॥
सब बातन ते रहें निरासा ॥ ५ ॥

दूख भूख तिन को रहै लागी ॥
संत सेव तै जो हैं त्यागी ॥
जगत बिखै कोई काम न सरही ॥
अन्तहि कुंड नरक की परही ॥ ६ ॥

तिनको सदा जगत उपहासा ॥
अन्तहि कुंड नरक को बासा ॥
गुरु पग ते जे बिमुख सिधारे ॥
इहां ऊहां तिनके मुख कारे ॥ ७ ॥

पुत्र पौत्र तिनके नही फरै ॥
दुख दै मात पिता कौ मरै ॥
गुरु दोखी सग की मृतु पावै ॥
नरक कुंड डारे पछुतावै ॥ ८ ॥

बाबे के बाबर के दोऊ ॥
आप करे परमेसर सोऊ ॥
दीन साह इन को पहिचानो ॥
दुनी पति उनकौ अनुमानो ॥ ९ ॥

जो बावे के दाम न दैहैं ॥
तिन ते गहि बाबर के लैहैं ॥
दै दै तिन को बडी सजाइ ॥
पुनि लैहै गृह लूट बनाइ ॥ १० ॥

जब ह्वै है वेसुख बिना धन ॥
तब चढ़िहै सिक्खन कह मागन ॥
जे जे सिक्ख तिनै धन दैहैं ॥
लूट मलेच्छ तिन्हूं कौ लैहैं ॥ ११ ॥

जब हुइहै तिन द्रव्य बिनासा ॥
तब धरिहै निज गुरु की आसा ॥
जब ते गुरु दरसन को ऐहैं ॥
तब तिन को गुरु मुख न लगैहैं ॥ १२ ॥

बिदा बिना जैहैं तब धामं ॥
सरिहै कोई न तिन को कामं ॥
गुरु दर ढोई न प्रभु पुरि वासा ॥
दुहूं ठौर ते रहे निरासा ॥ १३ ॥

जे जे गुरु चरनन रत ह्वै हैं ॥
तिन को कष्ट न देखत पै हैं ॥
रिद्धि सिद्धि तिन के गृह माहीं ॥
पाप ताप छ्वै सकै न छाहीं ॥ १४ ॥

तिह मलेछ छ्वैहै नहीं छाहां ॥
अष्ट सिद्धि ह्वै है घरि माहां ॥
हास करत जो उद्यम उठै है ॥
नवोंनिधि तिन के घर ऐहै ॥ १५ ॥

मिरजा बेग हुतो तिह नामं ॥
जिन ढाहे बेमुखन के धामं ॥
सब सनमुख गुरु आप बचाए ॥
तिन के बार न बांकन पाए ॥ १६ ॥

उत औरंग जिय अधिक रिसायो ॥
चार ऐहदीयन और पठायो ॥
जे बेमुख तांते बचि आए ॥
तिन के गृह पुनि इन्है गिराए ॥ १७ ॥

ते तजि भजे हुते गुरु आना ॥
तिन पुनि गुरू अहदिअहि जाना ॥
मूत्र डार तिन सीस मुण्डाए ॥
पाहुरि जानि गृहहि ले आए ॥ १८ ॥

जे जे भाज हुते बिनु आइसु ॥
कहो अहिदींअहि किनै बताइसु ॥
मूण्ड मूण्डि कर शहिर फिराए ॥
कांर भेट जनु लैन सिधाए ॥ १९ ॥

पाछे लागि लरिकवा चले ।।
जानु कि सिक्ख सखा हैं भले ॥
छिवके तोबरा बदन चढ़ाए ॥
जनु गृह खान मलीदा आए ।। २० ।।
मस्तक सुभे पनहीयन घाइ ।।
जनु करि टीका दए बनाइ ।।
सीस ईंट के घाइ करेही ।।
जनु तिनु भेट पुरातन देही ॥ २१ ।।

दोहरा ॥

कबहूं रण जूझिओ नही, कछु दै जसु नहि लीन ।
गांव बसत जानियो नही, जम सों किन कहि दीन ।। २२ ॥

चौपई ॥

इह बिधि तिनो भयो उपहासा ॥
सब सन्तन मिलि लखयो तमासा ।।
सन्तन कष्ट न देखन पायो ॥
आप हाथ दै नाथ बचायो ॥ २३ ।।

चारणी ।। दोहरा ।।

जिस नो साजन राखसी दुशमन कवन बिचार ।।
छ्वै न सकै तिह छाहि को नि:फल जाइ गवार ।। २४ ॥
जो साधू सरणी परे तिन के कवन विचार ।।
दन्त जीभ जिम राखिहै दुष्ट अरिष्ट संहार ।। २५ ॥

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे शाहज़ादे व अहदीआ
गमन वर्णनं नाम त्रैदशमोध्याय समाप्तमस्तु
शुभमस्तु ॥ १३ ।। अफज़ू ।। ४६० ।।

चौपई॥

सर्ब काल सब साधु उबारे॥
दुखु दै कै दोखी सब मारे॥
अद्भुति गति भगतन दिखराई॥
सब सङ्कट ते लए बचाई॥ १॥

सब संकट ते सन्त बचाए॥
सब कंटक कंटक जिम घाए॥
दास जान मुहि करी सहाइ॥
आपे हाथ दै लयो बचाइ॥ २॥

अब जो जो मैं लखे तमासा॥
सो सो करों तुमै अरदासा॥
जो प्रभ कृपा कटाछ दिखै है॥
सो तव दास उचारत जैहै॥ ३॥

जिह जिह बिधि मै लखे तमासा॥
चाहत तिनको कियो प्रकासा॥
जो जो जन्म पूर्बले हेरे॥
कहिहों सो प्रभु पराक्रम तेरे॥ ४॥

सर्ब काल है पिता अपारा॥
देबि कालका मात हमारा॥
मनूआ गुरु मुरि मनसा माई॥
जिन मोको शुभ क्रिया पढ़ाई॥ ५ =

जब मनसा मन भया बिचारी ॥
गुरु मनूआ कह कहियो सुधारी ॥
जे जे चरित पुरातन लहे ॥
ते ते अब चहीअत है कहे ॥ ६ ॥

सर्ब काल करुणा तब भरे ॥
सेवक जान दया रस ढरे ॥
जो जो जन्म पूर्बलो भयो ॥
सो सो सब सिमरण कर दयो ॥ ७ ॥

मो को इती हुती कर सुद्धं ॥
जस प्रभु दई कृपा करि बुद्धं ॥
सर्ब काल तब भए दयाला ॥
लोह रच्छ हम को सब काला ॥ ८ ॥

सर्ब काल रच्छा सब काल ॥
लोह रच्छ सबंदा बिसाल ॥
ढीठ भयो तब कृपा लखाई ॥
ऐंडो फिरों सभन भयो राई ॥ ९ ॥

जिह जिह बिधि जन्मन सुधि आई ॥
तिम तिम कहे गिरंथ बनाई ॥
प्रथमे सतजुग जिह बिधि लहा ॥
प्रथमे देबि चरित्र को कहा ॥ १० ॥

पहिले चण्डी चरित्र बनायो ॥
नख सिख ते क्रम भाख सुनायो ॥
छोर कथा तब प्रथम सुनाई ॥
अब चाहत फिरि करों बडाई ॥ ११ ॥

इति श्री विचित्र-नाटक ग्रन्थे सर्बकाल की बेनती
वर्णनं नाम चौदशमोध्याय समाप्तमस्तु
शुभमस्तु ॥ १४ ॥ अफजू ॥ ४७१ ॥

* समाप्तम् *

गुरुद्वारा प्रिंटिंग प्रेस, रामसर रोड, अमृतसर
प्रिंटर–स० बचन सिंह।